चन्दामामा
अक्तूबर १९९३

कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी
और विश्व के सबसे ज्यादा ताकतवार इंसान
साबू का नया कॉमिक

चाचा चौधरी और फिल्म स्टार

प्राण
चाचा चौधरी
और फिल्म स्टार

'श्रीमतीजी' और उसके पति किशोर की हंसाने
और गुदगुदाने वाली नोकझोंक, पूरे परिवार के
लिए स्वस्थ मनोरंजन से भरी नयी कॉमिक

श्रीमतीजी और स्वेटर

प्राण
श्रीमतीजी
और स्वेटर

डायमण्ड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

CoFFEE EEE!! @#@ξ✱...
No, IT'S ToFFEE!!
THE ARGUMENT CONTINUES...
Parry's
COFFY BITE
HTA-7106-94
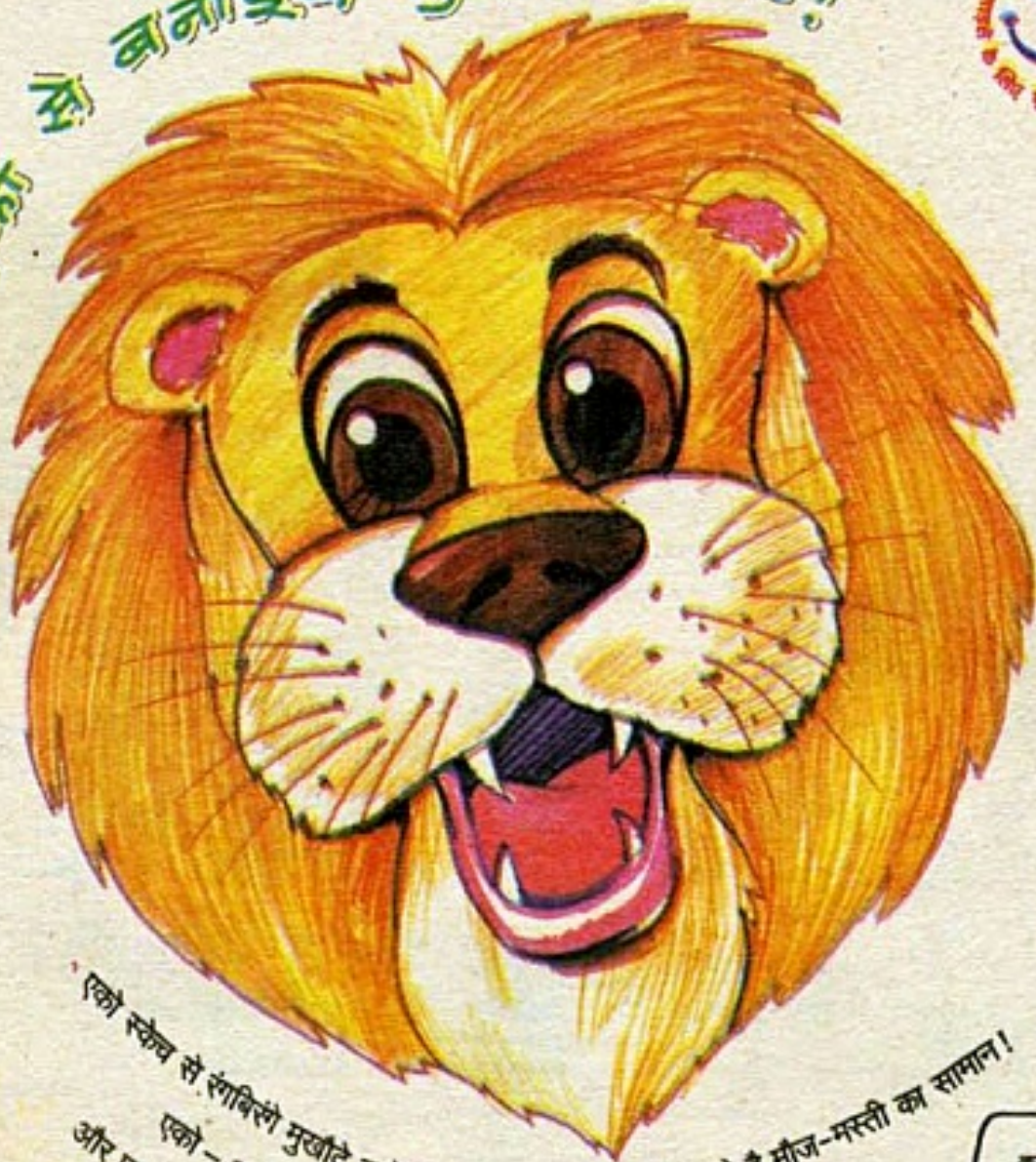
एको से बनाइए सुंदर मुखौटे!
एको स्केच से रंगबिरंगे मुखौटे न केवल बनाना आसान... बल्कि ये है मौज-मस्ती का सामान!
एको – अनेक सुंदर रंगों में १२, २४ और ३० के पैक में उपलब्ध.
और एको की सबसे बड़ी खूबी, ये हैं वॉटर-बेस रंग और अविषैले भी यानी
इनका इस्तेमाल भी नन्हें-मुन्नों के लिए पूरी तरह सुरक्षित है!
और फिर जब मम्मी देखेंगी आपका कमाल... तो खुशी से होगा बुरा हाल!
हजारों इनाम जीतो!
एको 'फन-विथ-कलर्स' प्रतियोगिता में हिस्सा लीजिए! प्रवेश-पत्र हर पैक के साथ उपलब्ध है
मुफ्त! कलरिंग बुक हर पैक के साथ!
Ekco®
आपकी कला की सुंदर अभिव्यक्ति.
एको – मौज़मस्ती का बेहिसाब हंगामा!

वैमीकोल चमत्कारी गम
ख़ूब चिपकाओ उसके संग
गुड़िया का एक सुन्दर सा घर बनाओ, फर्नीचर और दूसरी चीजों से सजाओ।
मोटे-ताजे जानवर, मजेदार मुखौटे, और खिलौने। लकड़ी, कागज, कार्ड-
बोर्ड, फैब्रिक... कुछ भी इस्तेमाल करो! मौज मस्ती की कोई सीमा नहीं।
सोचते जाओ, बनाते जाओ, अपना खाली समय बेहतर ढंग से बिताओ।
VAMICOL®
आर्ट एण्ड क्राफ्ट एडहेसिव
वैम ऑरगेनिक
केमिकल्स लिमिटेड
स्काईलाइन हाउस, 85, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019
VAMICOL
ART AND CRAFT ADHE
VAMICOL

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

धार्मिक सामंजस्य

११, सितंबर, १८९३ को जिस धार्मिक संसद का प्रारंभ हुआ, उसका शताब्दी-महोत्सव निकट भविष्य में संपन्न होनेवाला है । इस अपूर्व अवसर पर स्वामी विवेकानंद उपस्थित हुए और उन्होने इसमें भाग लिया । इस अपूर्व घटना को इसी कारण हम सदा स्मरण रखते हैं । वे वहाँ हिन्दुत्व का प्रतिनिधित्व करने के लिए नहीं गये बल्कि वे वहाँ गये, वेदों के विश्व धर्म का प्रतिनिधित्व करने ।

वे इक्तीसवें वक्ता के रूप में चुने गये । परंतु उन्होने अध्यक्ष डा. जे. हेच. बारोस को बताया कि वे अंत में भाषण देने बुलाये जाएँ । आखिर जब वे उपस्थित महाशयों को संबोधित करने उठे तो सातों हज़ार के सातों हज़ार श्रोतागण उठ खड़े हो गये और दो मिनिटों से अधिक लगातार तालियाँ बजाते रहे ।

उनके सुँदर वस्त्र, लंबी पीली पगड़ी, कांस्य वर्ण तथा सुँदर रूपरेखा ने अवश्य उपस्थित सज्जनों की आँखों को चकाचौंध कर दिया होगा । लेकिन इससे भी अधिक प्रभावित वे इसलिए हुए कि उन्होने अपने भाषण में किसी दूसरे धर्म के विरुद्ध एक भी शब्द नहीं कहा । उन्होने कहा कि सब धर्मों का मूल भगवान है । धर्मों ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भिन्न-भिन्न मार्गों को अपना या है । उनके भाषण का मुख्य विषय था-विश्व में सहिष्णुता व उदारता तथा अन्य धर्मों के साथ सामंजस्य । अख़बारों और पत्रिकाओं में स्वामी विवेकानंद के लिखेहुए विषयों के अंश ही हम भारतीय पढ़ा करते हैं । क्या भारतीयों पर आत्मा को झकझोरनेवाले, उन विषयों का कोई प्रभाव है? यह प्रश्न बारंबर पूछा जा रहा है क्योंकि सौ साल गुज़रने के बाद भी हम केवल धार्मिक सामंजस्य की बात को दुहराते जा रहे हैं, लेकिन आजकल जो धार्मिक दंगे-फ़साद हमारे इर्द-गिर्द हो रहे हैं, देखते हुए आँख बंद कर लेते हैं और चुप्पी साधे बैठते हैं । आशा करते हैं कि इस शताब्दी के बाद ही सही हमारे हदय में परिवर्तन होगा ।

वर्ष : ४६ अक्तूबर १९९३ अंक : २

एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

निशाना चूक न जाए!
आप हैं छोटे हीरो. और बनना चाहते हैं सब से तेज़ फ़न शूटर. तो देर क्यों ? कीजिए इतना कि इस पेज को काटिए, दीवार पर चिपकाइए, अपनी पसंद का फ़न शूटर उठाइए और लगाइए धमाकेदार निशाना !
20 अंक
आप हैं निशानेबाज़ी के सरताज
70 अंक भागते अपराधी की कार पंक्चर की
10 अंक कटे
शीशी क्यों तोड़ी ?
80 अंक
आप हैं आधुनिक अर्जुन, अचूक निशानेबाज़
40 अंक
10 अंक
1 RUPEE
10 अंक कटे
फ्लाइंग सॉसर गन
माउज़र पिस्टल
रैपिड फायर
HTA.1269.94
फन शूटर्स की सम्पूर्ण मालिका वाले धमाकेदार पोस्टर के लिए इस पते पर लिखिए: ब्लो प्लास्ट लिमिटेड (टॉयज़ डिवीज़न), लियो हाउस, 88-सी, ओल्ड प्रभादेवी रोड, बम्बई-400 025. साथ में अपना नाम, उम्र, स्कूल का नाम और अपने पते वाला लिफ़ाफ़ा भेजना न भूलें.
LEO

क्यूबा की परिस्थितियाँ

क्यूबा की क्रांति के समाप्त हुए पिछले जुलाई २६ को चालीस साल हो गये । फिर भी इस देश की आर्थिक दुस्थिति के कारण इस साल पहले की तरह उत्सव नहीं मनाया गया । चालीस सालों के पहले साम्यवादी सिद्धांतों से प्रभावित फीडल कास्ट्रो नामक युवक वकील ने, अपनी ही विचारधारा के कुछ बाग़ियों को लेकर कांटियागे के सैनिक अड्डे पर धावा बोल दिया । तानाशाह पुलगेन्पीयो बाटिस्टा के ख़िलाफ यह लड़ाई लड़ी गयी. जिसमें बहुत से बहादूर युवक मर गये । कास्ट्रो पकड़े गये और जेल में ठूँस दिये गये । तीन सालों के बाद और एक बार क्रांति लाने की कोशिश उन्होने की, लेकिन उसमें भी असफल हुए । जनवरी १९५९ की पहली तारीख़ को उन्होने तीसरा प्रयत्न किया, जिसमें वे सफल हुए । फलस्वरूप तानाशाह बाटिस्टा अपने प्राणों को बचाने के लिए विदेश भाग गया ।

कास्ट्रो ने हवाना में अपना समाजवादी शासन क़ायम किया । इसके कारण अमेरीका से उसके संबंध टूट गये, जो अप्रत्यक्ष रूप से अब तक उसपर शासन चलाता आ रहा था । १९६० में प्रधान कास्ट्रो ने, किसी प्रकार का हरज़ाना दिये बिना अपने देश में स्थित अमेरीकी व्यापार-संस्थाओं को अपने अधीन कर लिया । कास्ट्रो की इस कार्रवाई पर अमरीका बहुत ही क्रोधित हुआ और उस देश से अपने संबंध तोड़ ड़ाले । दूसरे ही साल उसने क्यूबा पर आक्रमण किया, परंतु इस प्रयत्न में वह पराजित हुआ ।

इसके बाद कास्ट्रो ने घोषित किया कि क्यूबा अब साम्यवादी देश बनकर रहेगा । उसने साम्यवादी सिद्धांतों के अनुरूप देश की आर्थिक प्रणालियों को अपनाया । क्यूबा में एक ही राजनैतिक दल था । उसका भी नाम रखा गया 'कम्यूनिस्ट पार्टी' । १९७६ में वे क्यूबा के अध्यक्ष चुने गये । १९८२ तक वे अपना पद संभालते रहे ।

कहा जाता है कि क्रिस्टफर कोलंबस ने १४९२ में जब अमरीका की खोज की, उसी साल क्यूबा में भी उसने कदम रखा । उस समय से वह स्पेन के अधीन रहा । १८९८ में जब स्पेन और अमरीका में युद्ध हुआ, तब स्पेन हार
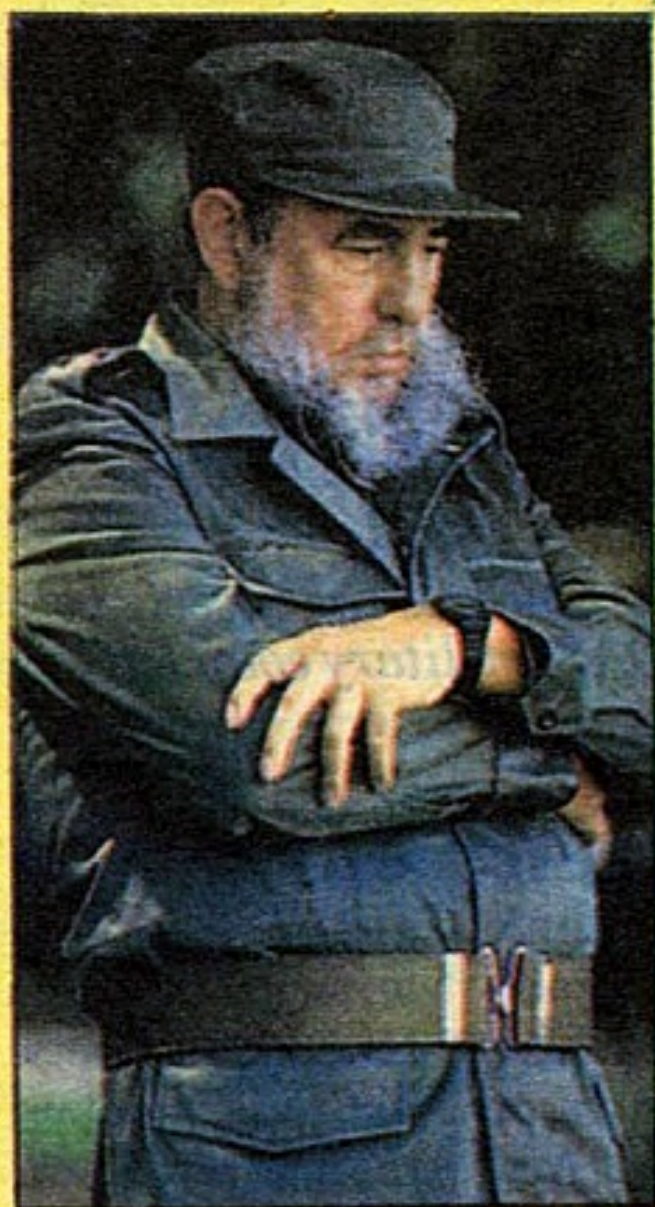
गया और क्यूबा अमरीका के अधीन हो गया। इसके तीन सालों के बाद १९०२ में क्यूबा स्वतंत्र देश बना। फिर भी क्यूबा की विदेश-नीति का निर्णय अमरीका ही निर्धारित करता था। १९३३ में तानाशाह बाटिस्टा ने शासन को अपने वश में कर लिया। १९४४ से १९५२ तक की अवधि को छोड़कर १९५९ तक क्यूबा में बाटिस्टा की तानाशाही ही चलती रही।

१९५९ से, अर्थात जब से फीडल कास्ट्रो प्रधान बने तब से पूर्व कुछ सालों तक सोवियत यूनियन का सहयोग, सहायता आदि इस देश को प्राप्त होते रहे। पूर्वी युरोपीय देशों की सहायता इसे मिलती रही। अभी हाल ही में जब कम्युनिस्ट देशों का पतन हो गया, और सोवियत युनियन छिन्नाभिन्न हो गया, तब से क्यूबा की आर्थिक स्थिति क्षीण होने लगी और उसे कठिन स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। कोलंबिया व अर्जिटीना, लाटिन अमेरिकन फेड़रेशन के सदस्य हैं। ये देश क्यूबा के मित्रों में से हैं। ये देश चाहते हैं कि क्यूबा फिर से अमरीका से अपने दौत्य-संबंध प्रारंभ करे। उन देशों का अभिप्राय है कि ऐसा करने पर ही क्यूबा पर लगाये गये दंड़-विधान अमरीका बदलेगा। लेकिन कास्ट्रो ने घोषित किया कि अगर अमरीका स्वयं यह प्रस्ताव रखे तो अवश्य इसपर ग़ौर करूँगा। पर उन्होने यह स्पष्ट कह दिया कि किसी भी हालत में क्यूबा अपनी समाजवादी प्रणालियों व विचारधाराओं को नहीं त्यागेगा।

१९९३ फ़रवरी में जो चुनाव हुए, उसमें नेशनल असेंब्ली के ९९ प्रतिशत स्थानों को कास्ट्रो की पार्टी ने जीता है। उस अवसर पर ६६ की उम्र के क्यूबा के नेता कास्ट्रो ने कहा "मै आशा करता हूँ कि फिर पाँच सालों के बाद मेरे देश की जनता यह नहीं कहेगी कि मैं फिर से उम्मीदवार बनकर चुनाव में खड़े हो जाऊँ।"

क्यूबा भी चीन और वियतनाम की तरह एक ऐसा देश है, जहाँ साम्यवादी शासन-भार संभाल रहे हैं। वियतनाम के युवक-युवतियों ने क्यूबा को चावल भेजा, जब कि उसे इसकी सख्त ज़रूरत थी। वे अब ५,०००,००० रैटिंग पाड़्स और पेन क्यूबा भेजने इकट्ठा कर रहे हैं।

राजा-चोर

प्लवंग देश के राजा अनंगसेन की अचानक मृत्यु हुई । उससे दो साल बड़ा लवंगसेन उस समय जंगल में शांतनु के आश्रम में रहता था । उसमें राजा बनने की इच्छा थी ही नहीं, इसलिए उसने अपने माता-पिता की अनुमति ली और ज्ञान-समृद्धि के लिए योगी, ज्ञानी और ऋषियों के निवास-स्थलों की ओर चल पड़ा ।

अनंगसेन का मुख्य मंत्री सुषेण स्वयं जंगल गया और अनंगसेन से मिला । उसे वर्तमान स्थिति का पूरा विवरण दिया और निवेदन किया "प्रभु, राजकुमार की अभी दस साल की ही उम्र है । और दस साल पूरे होने पर ही वे राजसिंहासन पर आसीन होने के योग्य होंगे । इस स्थिति में आप स्वयं राज्यभार नहीं संभालेंगे तो प्लवंग देश विपत्तियों में फँस जायेगा ।"

लवंगसेन ने मंत्री को उत्तर दिया "मुझमें राज्य की आकांक्षा नहीं है । शासन चलाने की दक्षता भी मैं नहीं रखता । इहलोक के सुखों की ओर भी मेरा कोई झुकाव नहीं है । इसलिए प्लवंग देश को मुझसे कोई लाभ नहीं होगा । मैं यहाँ आश्रम में आध्यात्मिक जीवन आनंद से बिता रहा हूँ । अलावा इसके, मेरे आने से मेरे भाई की पत्नी इंदुमति को असुविधा होगी । वह शायद सोचे कि उसके पुत्र के भविष्य में मैं बाधक बनूँगा ।"

'तो महारानी इंदुमती स्वयं यहाँ आयेंगी, और आपको निमंत्रण देंगीं ।" सुषेण यह कहकर वहाँ से चला गया ।

मंत्री के चले जाने के बाद लवंगसेन ने पूरा वृतांत अपने गुरु शांतनु को सुनाया और मार्गदर्शन की प्रार्थना की ।

शांतनु ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा "आज तक तुमने योगी की तरह जीवन

बी. सुभद्रा

बिताया है। मैं अपनी ज्ञान-संपदा का तुम्हें वारिस बनाकर हिमालय चला जाना चाहता था। लगता है, अब मेरी इच्छा अधूरी ही रह जायेगी, मुझे कुछ समय और प्रतीक्षा करनी होगी। तुम प्लवंग देश जाओ और जितना शीघ्र हो सके, वहाँ की परिस्थितियों को सुधारो। राजकुमार को राजा के योग्य बनने की शिक्षा दो। हाँ, एक बात का स्मरण अवश्य रखो, जब तक तुम राजा बने रहोगे, तब तक राज्य का पालन श्रद्धापूर्वक करना। तुम्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हम जो भी काम करें, निष्ठा और श्रद्धा के साथ करें। मुझे पूर्ण आशा है कि अपने इस कर्तव्य को तुम भली-भाँति निभाओगे, क्योंकि तुम ज्ञानी हो, योगी हो, परिपूर्ण हो, निस्वार्थी हो।"

दूसरे ही दिन इंदुमति आश्रम में आयी और लवंगसेन से प्रार्थना की "आप मेरे पुत्र का और राज्य का कल्याण चाहते हों, तो तक्षण ही शासन-भार को स्वीकार कीजिये।"

लवंगसेन उसकी बात को टाल नहीं सका। वह गुरुदेव की अनुमति लेकर राजधानी नगर पहुँचा। उसने गुरुवर शांतनु की बातें नहीं भुलायीं। राज्य-शासन पर अपनी दृष्टि केंद्रित की। तब उसे मालूम हुआ कि राज्य के खज़ाने में धन नहीं है, और जब कभी भी धन की आवश्यकता पड़ी है, लोगों से कर वसूले गये हैं और खज़ाना भरते आ रहे हैं। वह यह भी जान गया कि राजकर्मचारियों में भ्रष्टाचार तीव्र हो गया है।

पहले लवंगसेन ने मंत्रियों से चर्चाएँ की। उनसे चर्चाएँ करने के बाद उसे मालूम हुआ कि दिवंगत राजा अनंगसेन किसी की सलाहों की परवाह नहीं करता था और जो वह चाहता था, वही करता था। यही वजह है कि देश की इस प्रकार अधोगति हो गयी। उसने मंत्रियों के सुझावों में जो बातें अच्छी हैं, स्वीकार किया और इंदुमति से भी चर्चा की।

इंदुमति ने लवंगसेन से कहा "मेरे पिता ने मुझे बचपन से ही राजनीति की शिक्षा भली-भाँति दी है। दुर्भाग्य की बात है कि आपके भाई ने मेरी सलाहें अनसुनी कर दीं।" उसने अपनी तरफ़ से भी कुछ सुझाव

सुझाये ।

लवंगसेन थोड़े ही समय में समझ गया कि इंदुमति की सलाहें सचमुच ही प्रशंसनीय हैं, लोक-ज्ञान से भरित हैं । यों वह सब की बातों का आदर करता था, पर साथ ही अपनी बुद्धि का भी उपयोग करते हुए राज्य में कितने ही सुधार ले आया । एक साल के अंदर ही इन सुधारों के परिणाम सफल सिद्ध हुए ।

लवंगसेन एक तरफ़ शासन-भार बड़ी दक्षता से करने लगा और दूसरी तरफ़ अपने भाई के पुत्र राजकुमार प्लवंग को राजनीति की भी शिक्षा देता गया । प्लवंग राजनीति को बारीकियों की अच्छी तरह और शीघ्रता से समझने लगा ।

लवंगसेन इसपर बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसने एक दिन इंदुमति से कहा "प्लवंग के पंद्रहवें साल में ही उसका राज्याभिषेक कराकर मैं आश्रम लौट सकता हूँ । तुम्हारी दक्षता भी उसका सहयोग दे तो प्लवंग देश उसके राज्य-काल में पल्लवित होगा और चिरस्थायी होगा ।"

अपने बहनोई की बातों से इंदुमति घबरा गयी और बोली "यह संभव नहीं होगा । जब तक उसकी बीस साल की उम्र ना होगी, तब तक आप ही को राज्य-भार संभालना होगा । ऐसा ना होने पर राज्य दूसरे राजाओं के अधीन हो जायेगा । कितने ही लंबे अर्से से आपका वंश जो इसपर शासन चला रहा है, बदनाम हो जायेगा, अपनी प्रतिष्ठा खो बैठेगा । प्रजा इसके लिए आपको उत्तरदायी मानकर आपको कोसेगी ।" यह कहते समय उसकी आँखों से आँसू बहने लगे ।

इंदुमति के आँसू और भाई के बालक पुत्र की असहायता ने लवंगसेन के हृदय को दुखी कर दिया । उसे इंदुमति की प्रार्थना को ठुकराने का साहस नहीं हुआ । लवंगसेन प्रवृत्ति से दयार्द्र हृदय का है, सर्वजन का कल्याण चाहनेवाला है और समर्थ भी है ।

क्रमशः लवंगसेन के शासन-काल में भ्रष्टाचारियों का स्थान नहीं रहा । कुछ भ्रष्टाचारी मन ही मन लवंगसेन से कुढ़ते थे । उसपर क्रोधित होते थे, पर लाचार होकर उन्हें चुप रह जाना पड़ा । यों पाँच साल गुज़र गये । एक दिन शांतनु अपने

आश्रम से प्लवंग की राजधानी आया और लवंगसेन से मिलकर बोला "मैं वृद्ध होता जा रहा हूँ, मेरी ज्ञान-संपदा तुम अपनालो और मेरे आश्रम का प्रधान बन जाओ । तभी मैं हिमालय प्रांत में जा पाऊँगा ।"

इन पाँच सालों की अवधि में, लवंगसेन में, राजभोग व पद के प्रति मोह होता जा रहा था । इसलिए उसने शांतनु से अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहा । वह उन्हें इंदुमति के पास ले गया । वह विषय जानकर शांतनु के पैरों पर गिरी और रोती हुई गिड़गिड़ायी कि किसी भी स्थिति में लवंगसेन को शासन-भार से हटाइये मत और उनपर दबाव मत डालिये कि वे आश्रम लौटें ।"

फिर लवंगसेन ने एक बड़ी सभा बुलायी और शांतनु की आज्ञा का विवरण सुनाया । मंत्री, सेनाधिपति, कर्मचारी तथा आम जनता ने भी शांतनु से अनुरोध किया कि वे लवंगसेन को आश्रम वापस ना ले जाएँ ।

लवंगसेन यह सब देखते हुए द्रवित हो गया और बोला "गुरुदेव, प्रजा को भय है कि मेरी अनुपस्थिति में राज्य में अराजकता फैल जायेगी और शासन-व्यवस्था छिन्नाभिन्न हो जायेगी । इस स्थिति में राज्य को छोड़कर मेरा आना उचित होगा?"

शांतनु उस समय एकदम मौन रहा । एकांत में लवंगसेन से कहा "तुम ज्ञानी होते हुए भी मोह-जाल में फँस गये हो । अशाश्वत के लिए शाश्वत छोड़ रहे हो । खूब सोचो-विचारो । मैं तुम्हें एक महीने की अवधि दे रहा हूँ । अगर आश्रम आना चाहते हो तो इस अवधि के अंदर आना ।" यह कहकर शांतनु वहाँ से चला गया ।

एक हफ्ते के बाद खज़ाने में चोरी करता हुआ एक चोर पकड़ा गया । वह और कोई नहीं था, बल्कि राजा के मंत्रियो में से एक मंत्री दीनानाथ का बड़ा बेटा था । वह जब न्यायस्थान पर लाया गया तब कितनी ही विचित्र बातें मालूम होने लगीं ।

तब तक दीनानाथ बहुत-सा धन खज़ाने से लूट चुका था । उसने इतना धन लूटा कि लूटे गये धन से राज्य की सारी प्रजा को मुफ़्त में खाना खिलाया जा सकता है ।

न्यायाधीश ने दीनानाथ और उसके बेटे को मौत की सज़ा दी । तब दीनानाथ ने

क्रोध भरे स्वर में कहा "न्याय सुनाने की योग्यता तुममें कहाँ है? हर साल एक लाख अशर्फ़ियाँ तुम्हें बख्शीश दे रहा हूँ। नया राजा क्या आया, बड़े ही सदाचारी की तरह मुझे सज़ा सुना रहे हो।"

न्यायाधीश खिसियाते हुए बोला "जो मुँह में आया, बक रहे हो। तुम्हारी बैसिर-पैर की बातों का कोई मूल्य नहीं। चूँकि तुमने मुझ पर आरोप लगाया है, इसलिए स्वयं राजा ही तुम्हारे साथ न्याय करेंगे।"

इसपर दीनानाथ ठठाकर हँसता हुआ बोला "राजा मुझे कैसे सज़ा दे पायेंगे? उन्हें मालूम है कि खज़ाने से धन लूटने की अक़्लमंदी केवल मुझ में ही है, इसलिए वे स्वयं मेरी सहायता ले रहे हैं। अगर उनकी कृपा-दृष्टि ना होती तो क्या मेरा बेटा खज़ाने के इर्द-गिर्द भी आ पाता? हमारा दुर्भाग्य है कि एक ईमानदार सैनिक के हाथों मेरा बेटा पकड़ा गया।"

उसके इस आरोप पर न्यायस्थान में उपस्थित सब लोग निश्चेष्ट रह गये। मंत्री सुषेण ने अपने को संभालते हुए पूछा" राजा को खज़ाने से धन की चोरी करने की आवश्यकता क्या है?"

इस सवाल पर दीनानाथ बिना घबराये बोला "एक रहस्य बताऊँगा, जो कोई नहीं जानता। लवंगसेन की एक पत्नी है जंगल में। उनका एक बेटा भी है। उनकी तीव्र इच्छा है कि अपने बेटे को राजा बनाऊँ। इसके लिए उन्होंने एक चाल चली है। जो
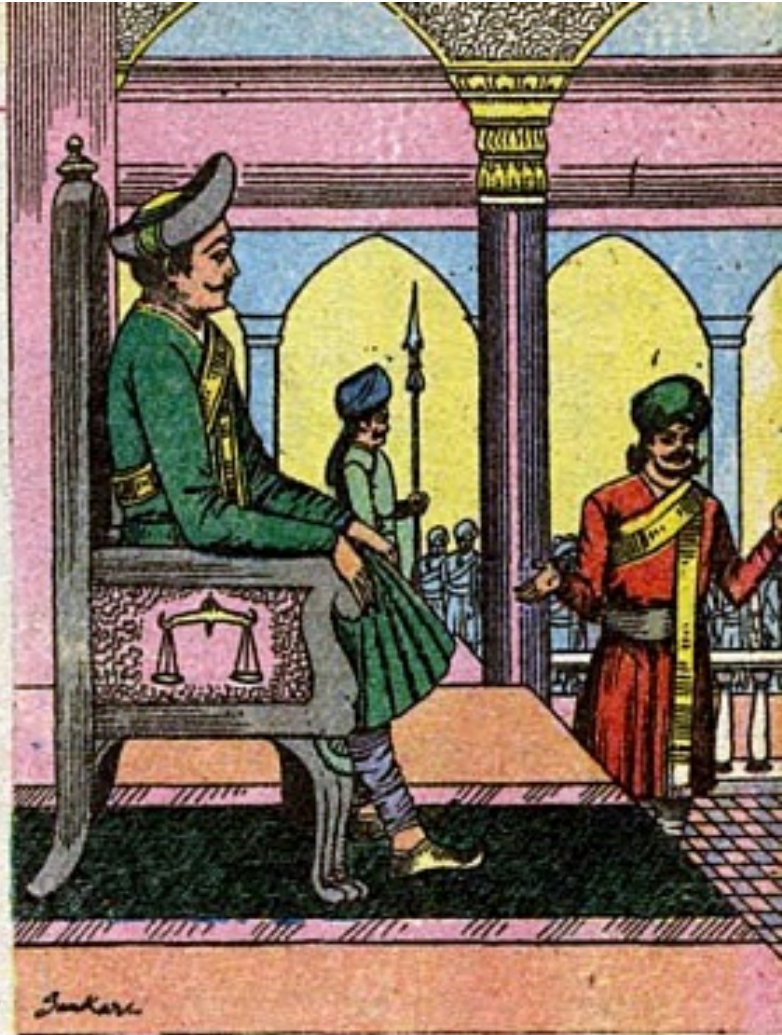
यों है-पहले धन को इकत्रित करें; उसके बाद सेना में विभाजन लाएँ, इसके लिए थोड़ा-सा धन खर्च किया जाए। बाकी धन से राजा का बेटा जंगल में सेना को इकट्ठा करेगा और अकस्मात राज्य पर धावा बोल देगा। राजा यहाँ से उसे सहयोग देकर इंदुमति और युवराज प्लवंग को मार डालेंगे। चूँकि वे राजा हैं, इसलिए उनकी योजना में भागीदार बनने से मैं बच नहीं सका।"

इस षड़यंत्र की बात से संपूर्ण राज्य में खलबली मच गयी। एक सामान्य नागरिक से लेकर इंदुमति तक हर एक ने लवंगसेन से इस आरोप का उत्तर पूछा।

आखिर एक दिन रानी इंदुमति ने लवंगसेन से कहा "अगर आप अपने को निर्दोषी साबित

नही कर सकते तो राज्य छोड़कर चले जाइये । तभी हमें विश्वास होगा कि आपमें राज्याकांक्षा नहीं है ।"

इसपर लवंगसेन ने तुरंत कहा "एक शर्त पर मैं राज्य छोड़कर जाने के लिए तैयार हूँ । दीननाथ ने कोई पाप नहीं किया । मेरे कहने पर ही उसने अपने बेटे को खज़ाने के पास भेजा है । मैंने जो-जो झूठ कहने को कहा, वही न्यायालय में उसने बताया । अगर आप लोग मुझे वचन देंगे कि उसे कोई सज़ा नहीं दी जायेगी, तभी मैं जंगल चला जाऊँगा ।"

"दीनानाथ से आपने यह नाटक करवाया । परंतु क्यों?" आश्चर्य में डूबी इंदुमति ने पूछा ।

उस प्रश्न का उत्तर बड़ी शांति से देते हुए लवंगसेन ने कहा "मेरे गुरुदेव शांतनु ने बताया था कि आप लोगों का आदर अशाश्वत है । सच और झूठ क्या है, येही जानने के लिए मैंने यह नाटक किया है । मैंने बड़ी ईमानदारी से आप सब लोगों की सेवा की है । मैंने भरसक मेहनत की कि आप सब लोग खुश और सुखी रहें । मेरे प्रोत्साहन से, जो चोर नहीं था, चोर का नाटक किया और अपने को बचाने के लिए झूठी-मूठी बातें बता दीं तो आप सब ने उसकी बातों का विश्वास कर लिया । मुझे अपराधी करार दिया । मुझे भी उसके साथ अपराधी ठहराया और मुझे सच साबित करने को कहा ।" '-लवंगसेन ऐसा अपराधी हो ही नहीं सकता । दीनानाथ की झूठी बातों का विश्वास करके राजा का अपमान नहीं करना चाहिये । पहले दीनानाथ साबित करे कि उसके सब आरोप सही हैं' । "अगर आप में से एक भी अगर यह कहता तो मुझे बहुत ही आनंद होता । जिस देश में राजा और चोर का समान आदर होता हो उस देश में रहना मेरे लिए संभव नहीं । जब मुझे मालूम हो गया कि जो प्यार और आदर मुझे प्राप्त हो रहे हैं वे अशाश्वत हैं तो शाश्वत ज्ञान से अब मेरा दूर रहना मूर्खता है ।" कहता हुआ राजा शांतनु के आश्रम लौट चला ।

विचित्र पुष्प
६

(राक्षस जंतु से माणिक्यपुरी राज्य को बचाने के लिए राजा प्रतापवर्मा पहाड़ी जाति के युवकों से सहायता पाने के लिए श्रृंग्माय पर्वतों में जाता है । राजकुमारी के साथ पधारे हुए राजा को देखकर वहाँ की जनता और उनका प्रधान शंभु बहुत ही आनंदित होते हैं । उत्तुंग ने राजा को वचन दिया कि वह उनकी आज्ञा का पालन करेगा । राजकुमारी 'शताब्दिका' पुष्पों को देखकर लौटी । राजा खुशी-खुशी राजधानी लौटा ।)

उत्तुंग जाति की प्रजा को इस बात पर असीम आनंद हुआ कि राजा, राजकुमारी के साथ उनके निवास-स्थल पर पधारे थे । इस बात पर भी उन्हें बड़ा आनंद हुआ कि राजा ने स्वयं राज्य पर आयी विपदा को दूर करने के लिए उनसे सहायता मांगी थी और अपनी ही जाति के युवक उत्तुंग ने यह कार्य-भार अपने कंधों पर लिया । अपने कुलदेवता से उन्होने प्रार्थना की कि उत्तुंग अपने प्रयत्न में सफल हो और सकुशल लौटे । उस युवक के सम्मानार्थ शाम को एक बड़े भोज का प्रबंध किया गया ।

बड़े और छोटे सब बस्ती के समीप के एक विशाल मैदान में इकट्ठे हुए । प्रधान शंभु व अन्य जातियों के प्रमुख जहाँ आसीन हुए, वहीं उत्तुंग के लिए भी आसन ड़ाला

गया । भोजन करते हुए प्रमुख आपस में चर्चा कर रहे थे कि उत्तुंग उस राक्षस जंतु का कैसे सामना करे? किस उपाय से उसका रास्ता सुगम हो सकता है आदि ।

चर्चाएँ और भोजन समाप्त होने के बाद प्रधान शंभु उपस्थित लोगों को संबोधित करता हुआ बोला "हमारे उत्तुंग को भली भांति मालूम है कि ये 'शताब्दिका' फूल कहाँ विकसित होते हैं । कल सबेरा होते ही छे नवयुवक उसके साथ जाएँगे और उन पुष्पों को ले आयेंगे । रात को राक्षस जंतु के आ जाने की आशंका है, इसलिए सूर्यास्त के पहले ही यह काम ख़तम होना चाहिये । जो फूल तोड़े गये हैं, उन्हें इकट्ठा करके एक जगह पर सुरक्षित रखे जाएँ और सब रात तक बस्ती में पहुँच जाएँ ।" थोड़ी देर रुककर फिर बोला "उन फूलों को समुद्र के बीच पहुँचाने के लिए एक नाव चाहिये । सुमद्री तट का प्रदेश बरबाद हो चुका है, इसलिए वहाँ नाव के मिलने की संभावना नहीं है'। इसलिए हमें ही यहाँ एक नाव बनानी होगी । क्या तुम में से कोई जानता है नाव बनाने की कला?"

जनता के बीच में से दो आदमी आगे बढ़े और बोले "हम कुछ समय तक समुद्री तट पर रह चुके हैं । वहाँ हमने नाव बनाने की पद्धति सीखी है । हम नाव बना सकते हैं" ।

"कितने दिनों में नाव तैयार करेंगे?" प्रधान ने पूछा । "दो दिनों में यह काम हो जायेगा" उन्होने उत्तर दिया । 'धन्यवाद' कहते हुए शंभु ने जनता की ओर देखा और कहा "तो कल सबेरे उत्तुंग के साथ पुष्प लाने कौन-कौन जाएँगे?"

सब युवकों ने मैं, मैं कहते हुए हाथ उठाया । "तुम्हारे उत्साह को देखकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है । लेकिन इतने लोगों की आवश्यकता नहीं है । छे युवक आयें तो काफ़ी होगा" कहते हुए उत्तुंग ने छे युवकों को चुना और उन्हें अलग खड़ा किया ।

फिर उत्तुंग ने प्रधान तथा वहाँ उपस्थित प्रमुखों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और उनके आशीर्वाद लिये । प्रधान शंभु ने बड़े प्रेम से उसकी पीठ थपथपायी । उत्तुंग हँसता

हुआ अपनी बहन रजनी को लेकर अपनी झोंपड़ी की ओर चल पड़ा ।

दूसरे ही दिन सबेरे उत्तुंग चुने गये उन छे युवकों को लेकर उस पहाड़ की तरफ निकला, जहाँ 'शताब्दिका' पुष्प विकसित होते हैं । जिस-जिस पेड़ पर विकसित पुष्प हैं, उन्हें उन्होने कुल्हाड़ियों से काटा और ज़मीन पर गिराया । जो पेड़ नीचे गिरे थे उनसे उन विकसित फूलों को तोड़ा और इकट्ठा करके बाँध लिया । वहाँ दो कोमल पौधे उत्तुंग ने देखा तो उन्हें भी उखाड़कर फूलों के साथ बाँध दिया और एक बड़े पथ्थर के पीछे सुरक्षित रखा । जब सूर्यास्त हो रहा था तब सातों युवक अपनी बस्ती की ओर निकल पड़े ।

जब वे बस्ती के निकट आये तो प्रधान शंभु सामने से आया और पूछा "जिस काम पर आप लोग गये हैं, वह काम पूरा हो गया है ना?"

उत्तुंग ने हँसते हुए कहा "हाँ, हो गया है ।" "कल शाम तक नाव तैयार हो जायेगी । परसों सबेरे हम सब समुँदर के किनारे की तरफ़ निकल पड़ेंगे" निकट ही खड़ी नाव के निर्माण का काम करनेवालों को देखते हुए प्रधान ने कहा । फिर उसने उत्तुंग से कहा "आप लोग थके-माँदे लौटे हैं । जाइये और सो जाइये । आज रात को कुछ लोगों को बस्ती की देखभाल के लिए तैनात करूँगा" ।

'हाँ' कहते हुए उत्तुंग अपने मित्रों के साथ वहाँ से चला गया । आधी रात तक प्रधान शंभु भी पहरेदारों के साथ-साथ घूमता
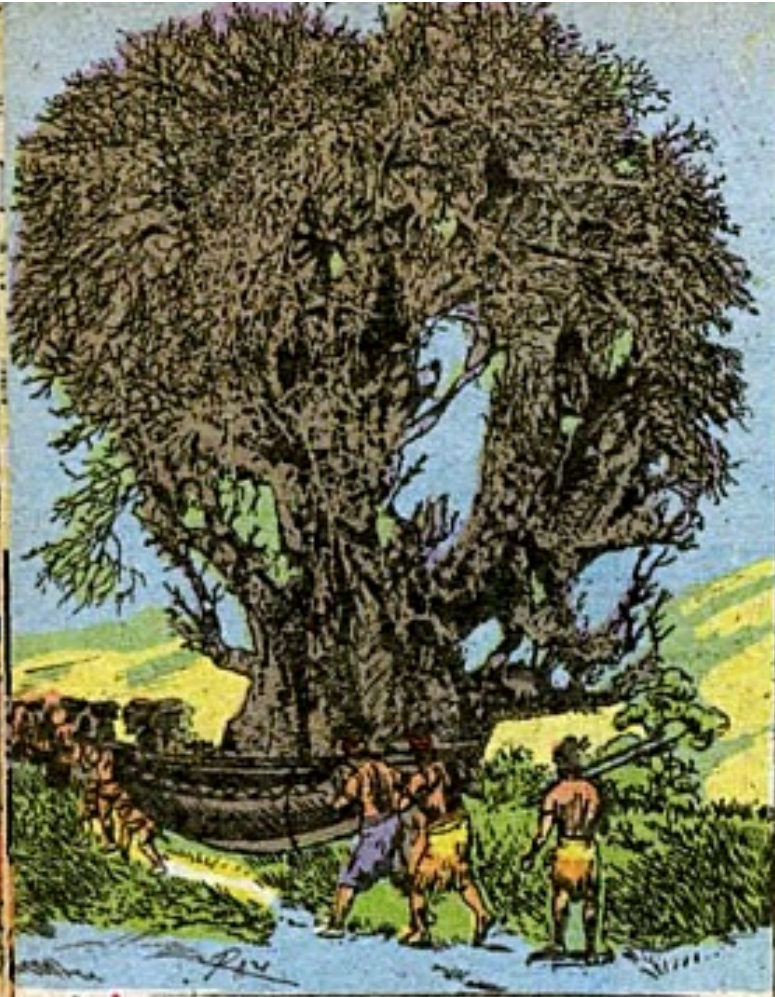
रहा। जब उन्होने बारंबार मना किया तो वह अपने घर की ओर लौट पड़ा।

सबेरे ही पहरेदार प्रधान के पास आयेऔर बोले "रात को राक्षस जंतु इस तरफ़ नहीं आया है। लेकिन कहीं दूर से पेड़ों के गिरने की आवाज़, चट्टानों के धड़ाधड़ गिरने की विचित्र ध्वनियाँ हमें सुनायी पड़ीं। चौथे प्रहर से वे ध्वनियाँ भी कम होती गयीं।"

प्रधान ने उन्हें जाने को कहा। दूसरे दिन प्रधान के आदेशानुसार उत्तुंग अपने दोस्तों के साथ उस जगह पर गया, जहाँ 'शताब्दिका' पुष्प बाँधकर सुरक्षित रखे गये थे। वे उन पुष्पों को ले आये। उनके आते-आते नाव के पास प्रधान तथा उत्तुंग की बहन रजनी भी पहुँच चुके थे। नाव तैयार है। प्रधान उन पुष्पों को बड़े आश्चर्य से और ग़ौर से देखता रहा। उनकी सुगंध ने वहाँ उपस्थित सब लोगों को मुग्ध कर दिया।

दूसरे दिन भोर में प्रधान, उत्तुंग और उसकी बहन रजनी, फिर उनके पीछे चार दृढ़ शरीरवाले नाव ढोते हुए दक्षिणी समुद्र की तरफ़ बढ़े चले जा रहे थे।

बस्ती के कुछ लोग इनके साथ थोड़ी दूरी तक आये और फिर बिदा लेकर वापस चले गये।

सूर्यास्त के पहले ही समुद्रीतट पर पहुँचने का उन्होने संकल्प किया था, इसलिए तेज़ी से वे चलते रहे। मध्यान्ह तक आधी दूरी तक वे पहुँच गये और एक बरगद के पेड़ के नीचे थोड़ी देर के लिए आराम किया। फिर निकलकर सुर्यास्त के पहले ही समुँदर के किनारे पहुँच गये। जो नाव ढोकर लाये थे, उन्होने उसे समुद्र के जल के पास पहुँचाया। बाक़ी लोगों ने फूलों के उन गट्ठरों को नाव में रखा। पुष्पों से मधुर सुगंधि फैल रही थी। उत्तुंग ने प्रधान के पैर छूकर प्रणाम किया। प्रधान ने बड़े प्यार से उसे उठाते हुए कहा "तुम्हें अवश्य विजय प्राप्त होगी। हमारे कुलदेवता की कृपा से तुम अवश्य ही सफलतापूर्वक लौटोगे।" उसे उन्होने आशीर्वाद दिया।

बगल मे ही खड़ी बहन रजनी ने कहा "भैय्या, तुम्हें जल्दी लौटना है। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी।" कहती हुई उसने

एक गठरी दी, जिसमें भोजन की सामग्री रखी हुई थी। फिर उसने कहा "रास्ते में भूख लगे तो यह खाने के लिए है।"

हँसते हुए उत्तुंग ने उसे लिया और कहा "राजकुमारी तेरी देखभाल में कोई कसर नहीं रखेंगी। मैं जल्दी ही लौटूँगा। राजकुमारी से भी यह बात बताना।" उसने अपने मित्रों की ओर हँसते हुए देखा और नाव में बैठकर डाँड़ हाथ में लिया।

मित्रों ने नाव को पानी में ढकेला। नाव लहरों पर गिरती और उठती हुई आगे बढ़ने लगी। किनारे पर खड़े सब लोगों ने हाथ हिलाते हुए, हँसते हुए, उसे बिदा किया। अब नाव और तेज़ी से आगे बढ़ने लगी।

जब तक नाव आँखों से ओझल नहीं हुई, तब तक लोग उसे देखते ही रहे। प्रधान जब वापस लौट पड़ा, तब वे भी उसके पीछे-पीछे चलने लगे। प्रधान ने रजनी के कंधे पर हाथ रखकर उसे सांत्वना दी। सब राजधानी की ओर शांत जाने लगे।

रास्ते में उन्होने देखा कि बहुत से पेड़ गिर गये हैं। और कितने ही घर ज़मीन पर गिरे पड़े हैं। अच्छा हुआ कि कोई मानव वहाँ नहीं था। प्रधान शंभु ने कहा "हम सुर्यास्त के पहले ही समुद्रीतट पर पहुँच गये। नहीं तो मालूम नहीं कि हम पर भी कैसी विपत्ति आती? राक्षस जंतु अवश्य ही बड़ा ही भयानक जंतु है। कभी-कभी लगता है कि हम उत्तुंग को मौत के मुँह में भेज रहे हैं। लेकिन मेरा मन कहता है कि उत्तुंग की वीरता, आत्मविश्वास व देशभक्ति उसे अवश्य ही विजयी बनाएँगे। वे इसी के बारे मे आपस में बातें करते हुए आगे बढ़े। सब महसूस करने लगे कि ऐसा विनाश मानव मात्र से संभव नहीं। यह अवश्य ही असीम बलशाली राक्षस जंतु की ही करतूत होगी।

रात और गुज़रे तो राक्षस जंतु का, समुद्र से निकल आने की संभावना है, ख़तरा है, इसलिए वे तेज़ी से चलने लगे। थोड़ी देर जाने के बाद वे जंगल से होते हुए जाने लगे। आकाश में बादल छाये हुए थे, इसलिए अंधेरा ही अंधेरा था। मज़बूरन वहीं एक जगह पर ठहरकर उन्हें रात गुज़ारनी

पड़ी ।

पूरब की दिशा में जब प्रकाश फैला, तब वे राजधानी की ओर निकल पड़े और सकुशल पहुँच गये । राजभवन पहुँचने के बाद पहरेदारों को उन्होने अपने आने की सूचना दी । राजा प्रतापवर्मा उस समय सेनाधिपति गंभीर वर्मा से सुरक्षा के प्रबंधों के बारे में चर्चा कर रहे थे । जैसे ही उन्हें समाचार मिला, वे सेनाधिपति के साथ आये और सादर उनका स्वागत किया ।

"माणिक्यपुरी को घोर विपत्ति से बचाने के लिए जो श्रद्धा आप दिखा रहे हैं, उसके लिए मैं आप सबों का कृतज्ञ हूँ । प्रजा आपकी देशभक्ति व त्याग को सदा याद रखेगी" राजा ने शंभु से कहा ।

शंभु ने विनय से कहा "अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए हमें आपने जो एक अवकाश दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद । महाराज, कल शाम को ही 'शताब्दिका' पुष्प लेकर, राक्षस जंतु की खोज में उत्तुंग समुद्र में निकल पड़ा है ।"

"अच्छा, इतनी जल्दी । आपकी बातें सुनकर बहुत खुश हुआ" कहते हुए उसने रजनी को देखते हुए कहा "रजनी, इधर आ ।"

रजनी के आगमन का समाचार राजकुमारी को जैसे ही मालूम हुआ, वैसे ही वह वहाँ पहुँच गयी थी । उसने रजनी से कहा "इस पल से हम दोनों दोस्त हैं ।" कहती हुई उसने उसके कंधे पर हाथ रखा और उसे अपने अंत:पुर की ओर ले गयी ।

रास्ते में रजनी ने राजकुमारी से कहा "मेरे भैय्या जब निकल रहे थे तब उसने आपको संदेश देने के लिए मुझसे कहा है कि वह जल्दी ही लौट आयेगा ।"

"अच्छा, बड़ी खुशी हुई । मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारे भैय्या अपने प्रयत्न में अवश्य ही सफल होकर लौटेंगे ।" हँसती हुई राजकुमारी ने कहा ।

(सशेष)

वेदांती की पत्नी

श्वेतांबर विद्यापुर के निवासी थे। वे बहुत ही बड़े वेदांती थे। उन्होंने वेदांत से संबंधित गंभीर समस्याओं को लेकर एक महान ग्रंथ की रचना की और दिवंगत हो गये। उस ग्रंथ के कुछ विषय बड़े से बड़े पंडितों की भी समझ में नहीं आ पाये।

शंकरशास्त्री जब बहुत ही विशद रूप से इस ग्रंथ की, मीमाँसा लिख रहे थे तब उन्हें भी बहुत संदेह होने लगे। एक भी ऐसा नहीं था, जो इन संदेहों का सही समाधान दे पाये।

एक दिन शंकरशास्त्री की धर्मपत्नी ने अपने पति से कहा "वेदांती श्वेतांबर की धर्मपत्नी जीवित है। उनपर अपने पति का प्रभाव अवश्य ही कुछ तो होता होगा। अच्छा यही होगा कि आप उनसे पूछें और अपने संदेहों का निवारण करें।"

शंकरशास्त्री, वेदांती श्वेतांबर के घर गये और उनकी पत्नी से पूछा "देवीजी, आपके पति से रचित वेदांत ग्रंथ के विषयों से आप भली-भाँति परिचित होंगीं। क्या आप मेरे संदेहों को दूर करने का प्रयास करेंगी?"

इसपर श्वेतांबर की धर्मपत्नी ने मंद मुस्कान भरते हुए कहा "पुत्र, मैंने अपना संपूर्ण दांपत्य-जीवन उनकी सेवा में बिताया,उन्हें समझने के प्रयत्न में गुज़ारा। इस स्थिति में भला उनसे रचित ग्रंथ के विषयों को जानने अथवा समझने का अवकाश ही मुझे कहाँ था?"

इस उत्तर को सुनकर शंकरशास्त्री के मुँह से बात ही नहीं निकली।

मज़ाकिया संजीव

धुन का पक्का विक्रमार्क पेड़ के पास गया। शव को पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर ड़ाल लिया। यथावत् मौन श्मशान की ओर बढ़ा। शव के अंदर का बेताल तब बोल उठा "राजन, लगता है। इस आधी रात को, इस भयानक श्मशान में, अपने किसी व्रत अथवा प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए इतने कष्ट उठा रहे हो, इतना परिश्रम कर रहे हो। लेकिन ध्यान रहे, कुछ परिस्थितियों में उन्हें पूरा करना असाध्य होता है।संजीव नाम का एक कवि साधारण व्यक्तियों की तारीफ़ के पुल बाँधा करता था। उसकी कविताओं में परिहास होता था; जिसे सुननेवाले प्रभावित होकर उसे तरह-तरह की भेंटें दिया करते थे। यों उसकी तगड़ी कमाई होती थी। वह कहा करता था कि जो सचमुच बड़े हैं, उनके बारे में कविता रचने की मुझमें योग्यता नहीं

बैताल कथा
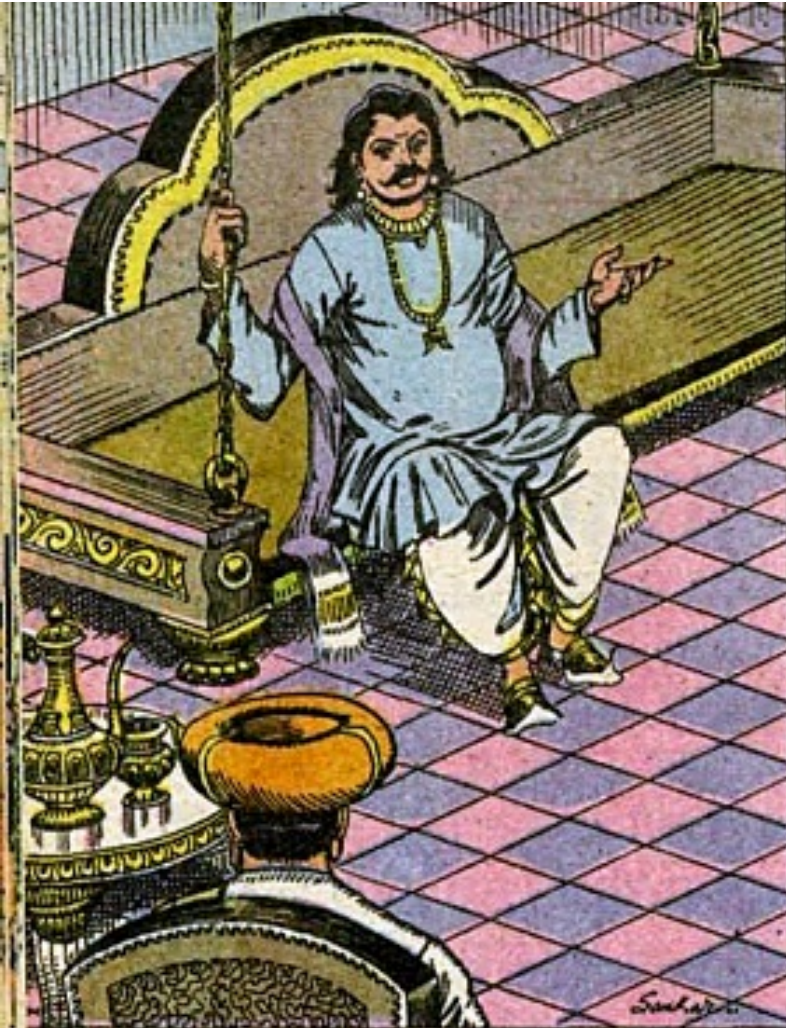
है । उसकी बातों से लगता था कि मानों बड़ों के बारे में कविता ना लिखने का उसने व्रत ले लिया है । परंतु परिस्थितियों के प्रभाव के वश होकर सर्वप्रिय एक राजा के बारे में उसने कविताएँ लिखीं और खूब धन भी कमाया । आप सब्री से उसकी कहानी मुझसे सुनिये," और बेताल यों कहने लगा ।

बहुत पहले रविचंद्र नाम का राजा कुँदनदेश पर शासन करता था । वह जहाँ कहीं भी जाता, जनसामान्य के साथ हिल-मिल जाता था । उसे अपने राजा होने का रत्ती भर भी घमंड नहीं था । दूसरा चाहे कैसी भी गालियाँ दे, नाराज़ ही नहीं होता था । सब लोग मुक्तकंठ से कहते थे कि भूलोक में इतने शांत स्वभाव का ना कोई था, ना होगा ।

संजीव कुँदनदेश का निवासी और कवि था । अपने वाक्-चातुर्य के लिए वह बहुत ही प्रसिद्ध था । अपनी कविता से ऐसी चमत्कारिक फुलझड़ियाँ छोड़ता था, जिन्हें सुनकर लोग हँसते हुए थकते ना थे । अपनी कविता के चमत्कार से किसी बड़े से बड़े आदमी को भी वह बेवकूफ बनाता था । उसकी कविताएँ सुनने क लिए लोग उतावले होते थे ।

एक बार श्वेतकेतु नामक एक कवि अकस्मात संजीव के गाँव आया । कुलदीप नामक एक धनवान के यहाँ वह अतिथि था । बातों ही बातों में कुलदीप ने संजीव की कविताओं की बड़ी प्रशंश की । श्वेतकेतु स्वयं संजीव के घर गया और अपना परिचम उसे देते हुए कहा कि तुम अपनी कोई कविता मुझे सुनावो ।

संजीव इस पर हँसा और बोला "कुलदीप की बातों में आकर आप धोखा मत खाइये । मणिकंठ उसका कट्टर दुश्मन है, जिसपर मैंने परिहास-भरी कुछ कविताएँ रची हैं । उन्हें पढ़कर सब लोग मणिकंठ की हँसी उड़ाते रहते हैं । यही कारण है, कुलदीप मुझे बहुत चाहता है । यह चाहत तभी तक मुझपर होगी, जब्र तक उसपर भी दो चार ऐसी कविताएँ ना लिखूँ ।" इसपर श्वेतकेतु भी हँसा और बोला "कुलदीप से आपको प्यार है । उनके बारे में आपने जो कविताएँ लिखी है, पढ़ चुका हूँ । उनमें आपने उनकी

बड़ी अच्छी तारीफ़ की है ।"

"उन कविताओं को सुनकर कुलदीप इस भूल में ना रहे कि मैं बड़ा कवि हूँ । मुझे धन की आवश्यकता पड़ी । मुफ़्त में कोई थोड़े ही मदद करता है । ऐसे वक़्त किसी पर कविताएँ रचकर पैसे कमा लेता हूँ । जो पैसे देकर अपने बारे में कविताएँ लिखवाता है, वह कभी बड़ा नहीं और हो भी नहीं सकता" संजीव ने बताया ।

"लेकिन कुलदीप को लेकर आपकी रची कविताएँ अद्भूत हैं, असमान्य हैं । ऐसी कविताएँ हमारे राजा रविचंद्र पर भी रचेंगे तो इतना धन आप कमा पायेंगे, जिससे आपके बाद की भी पीढ़ियाँ भी सुख से रहेंगी ।" श्वेतकेतु ने सलाह दी ।

इसपर संजीव ने अनिच्छा से कहा "महाशय, धन के लिए ऐरे-ग़ैरों पर भी कविताएँ लिखता अवश्य हूँ, लेकिन रविचंद जैसी महान हस्ती पर कविताएँ लिखकर मैं उनका अपमान करना नहीं चाहता । मैं जैसा हूँ, वैसे ही मुझे रहने दीजिये ।"

श्वेतकेतु बिना कुछ बोले वहाँ से चला गया । पर जब राजधानी पहुँचा तो उसने राजा रविचंद्र को संजीव के बारे में बताया । उसने राजा से कहा, "प्रभु, अब तक मुझे गर्व था कि मैं बड़ा कवि हूँ, लेकिन संजीव को देखने के बाद मेरा गर्व चकनाचूर हो गया है । वह पैसों के लिए अयोग्यों की भी प्रशंसा करता ज़रुर है, लेकिन उसमें पैसों की लालच नहीं । क्योंकि अपने मज़ाकों से उसने कितने ही धनवानों के दिलों को भी ठेस पहुँचायी है । जिसे धन की लालच हो, भला वह ऐसा क्यों करेगा?" उसने राजा को संजीव के मज़ाकों की कुछ विशेषताएँ भी बतायीं ।

रविचंद्र भी मज़ाकों का रसिक था । उसने तुरंत संजीव को अपने यहाँ बुलाया और कहा "कुछ समय तक मेरे दरबार में रहो और मेरी इच्छा पूरी करो । उसके बाद तुम चाहो तो मेरे दरबार में ही कवि बनकर रहो अथवा अपने गाँव वापस जा सकते हो । मैं तुम्हें भारी रक़म दूँगा, जिससे जीवन-पर्यंत किसी बात की कमी के तुम वहाँ रह सकोगे ।"

संजीव ने क्षण भर सोचा और फिर कहा "मैं जिनपर कविता रचना चाहूँ, रच सकता

हूँ। लेकिन वह कविता पहले आपको सुनाऊँगा और फिर भरे दरबार में।

"नहीं, अकेले सुनना मैं पसंद नहीं करता। सबों के साथ सुनने में ही मुझे मज़ा आता है।" राजा ने कहा। संजीव इसके लिए तैयार नहीं हुआ और आखिर राजा को संजीव की बात माननी ही पड़ी।

एक दिन राजा से संजीव ने कहा "प्रभु, मैंने आपके रसोइये के रसोइये को देखा है। उसे देखकर मैं तो चकित रह गया। मुझे लगा कि रसोइये की रसोई का स्वाद चखकर, कहीं राजा, रसोइये के लिए कुछ छोड़े बिना सब कुछ खाये तो नहीं जा रहे हैं? मैंने रसोइये से पूछा कि आखिर बात क्या है? उसके जवाब में उसने कहा "राजकार्यों में निमग्न होने की वजह से राजा को भोजन-पदार्थों मे विशेष अभिरुचि नहीं होती। वे स्वाद का तो ख्याल ही नहीं रखते। इस कारण, रसोइया जो भी बनाये, वे खा लेते हैं। इसलिए मैंने स्वादिष्ट खाना खाने के लिए एक अच्छे रसोइये को रख लिया है।"

यह सुनते ही राजा ठठाकर हँसता रहा और संजीव की काफ़ी प्रशंसा की। बाद दरबार में भी उसकी परिहासभरी बातों की वाहवाही हुई।

इस प्रकार जब कभी भी दरबार लगता था, तब संजीव किसी ना किसी पर मज़ाक करता रहता था। उसके मज़ाक सुनने के लिए दरबार में आनेवालों की संख्या अधिकतर होती गयी।

रविचंद्र के चार मंत्री थे। वे राजा के बहुत ही विश्वासपात्र थे। मुख्य विषयों में उनकी सलाह लिये बिना वह कुछ करता नहीं था।

उन चारों में से वीरवर मुख्य है। सब लोगों का कहना था कि अगर वह चाहे तो राजा को किसी भी बात पर मना सकता है। एक दिन संजीव ने वीरवर पर एक परिहास-भरी कहानी सुनायी।

उस कहानी के अनुसार वीरवर ने राजा को किसी बात पर मनाया, जो राजा को क़तई पसंद नहीं था। बाद इससे राजा को बड़ा लाभ पहुँचा। राजा वीरवर से बहुत खुश हुआ और उसे एक रत्न-खचित कंगन पुरस्कार में दिया। वीरवर ने उसे अस्वीकार

करते हुए कहा कि मुझे इससे छोटा कंगन चाहिये । राजा अचरज में पड़ गया और कहा, कि कोई भी और बड़ा कंगन मांगेगा पर, तुम क्यों इससे छोटा कंगन माँग रहे हो? मंत्री ने जवाब दिया कि कंगन बड़ा हो तो मेरी पत्नी के हाथ में वह ढीला पड़ जायेगा ।

"अपनी पत्नी के लिए क्या तुम दूसरा कंगन नहीं बनवा सकते हो? मैं तुम्हें भेंट में जो दे रहा हूँ उसे लेने से अस्वीकार करके और छोटे कंगन की मांग करना तुम्हारी बुद्धिहीनता नहीं?" राजा ने कहा ।

"प्रभु, जब तक आप जीवित हैं, तब तक मैं अपनी पत्नी के लिए अनगिनत रत्नों के कंगन बनवा सकता हूँ, पर आप जो भेंट दे रहे हैं, वह मेरे लिए नहीं, बल्कि मेरी पत्नी के लिए है । मैं अपनी पत्नी को हमेशा खुश रखना चाहता हूँ । ऐसा ना होने पर मैं शांत नहीं रह पाऊँगा । उस स्थिति में भला मैं आपको अच्छी सलाहें कैसे दे पाऊँगा?" वीरवर ने बड़े विनय से कहा ।

सब मानते हैं कि वीरवर अपनी पत्नी की बात नहीं टालता । इसलिए संजीव की गढ़ी कहानी सुनकर राजा हँसता ही रहा ।

रविचंद्र के दूसरे मंत्री सुबुद्धि के अधीन सेना और सेनाधिपति हैं । वह जैसा कहता है वैसा उनको करना पड़ता है । उसकी आज्ञा के विरुद्ध वे कोई भी काम नहीं करते । सुबुद्धि बहुत ही पतला और कमज़ोर शरीर का है । इसलिए संजीव ने सुबुद्धि के बारे में चमत्कार करते हुए कहा "राजा बहुत अच्छे मनुष्य हैं । उनको अच्छी तरह मालूम है कि कमज़ोरों की कैसी रक्षा करनी

चाहिये । इसलिए उन्होने सुबुद्धि की रक्षा का अच्छा प्रबंध किया है ।" राजा को संजीव का यह परिहास भी बहुत अच्छा लगा ।

तीसरा मंत्री शिशुपाल बहुत ही कोमल स्वभाव का है । ह्दय को पिघला देनेवाला छोटा-सा भी दृश्य वह देख ले तो उसकी आँखों से आँसू बरस पड़ते हैं । शिशुपाल की कोई संतान नहीं थी । संतान के लिए उसने कई पूजाएँ की, कई व्रत रखे ।

संजीव ने शिशुपाल के बारे में कहा "एक बार मैं शिशुपाल के घर गया तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोये जा रहा था । मुझे देखकर उसकी पत्नी ने कहा "आप धबराइये मत । बच्चों की कमी की पूर्ति तरह-तरह से वे करते रहते हैं । यह भी उन पद्धतियों में से एक है ।"

राजा रविचंद्र इस बात पर बहुत देर तक हँसता रहा और कहा "संजीव, इस तरह लगातर रोते हुए शिशुपाल को मनाने के प्रयत्न में लगी उसकी पत्नी की याद आते ही, मैं अपनी हँसी रोक नहीं पा रहा हूँ । जरा बताओ तो सही, तुममें ऐसी कल्पनाएँ कैसे जगती हैं?"

सभासदों को भी संजीव का यह मज़ाक बहुत ही अच्छा लगा ।

चौथा मंत्री नवनीत कम उम्र का था । सब कहते हैं कि असल में राजा को उसकी कोई ज़रुरत नहीं थी । चूँकि राजा उसे चाहता था, इसलिए उसे मंत्री बनाया ।

नवनीत जब एक साधारण राजकर्मचारी था तब एक दिन राजा राजउद्यान में टहल रहा था । तब सामने से एक साँप आया और राजा को डसने ही वाला था, तो नवनीत ने उस सांप को वहाँ से हटा दिया । पर उस साँप ने नवनीत को डस लिया । राजवैद्यों ने उसकी चिकित्सा की । उसके चंगे हो जाने के बाद राजा ने नवतीत से कुछ माँग लेने के लिए कहा तो उसने मंत्रिपद माँगा । तीन सुयोग्य और सक्षम मंत्री तो थे ही, फिर भी राजा ने अपने प्राणदाता की मांग पूरी की ।

इस पृष्ठभूमि को मद्देनज़र रखकर संजीव ने नवनीत के बारे में एक मज़ाक बताया, जो यों हैं– वह एक बार किसी से सर्प और सोपान का खेल खेल रहा था । जब साँप की पूँछ पास आयी तो उसे लेकर ऊपर चला गया और उसे अपने पास रख लिया ।

तब उसके प्रत्यर्थी ने कहा "भाई साहब, वह सीढ़ी नहीं साँप है ।"

तो नवनीत ने कहा "साँप ही मेरी सीढ़ियाँ हैं ।" यह सुनते ही राजा का चेहरा गुस्से से लाल हो गया । उसने कहा "आज तक मैं सोचता रहा कि तुम्हारे आदर्श उत्तम हैं । सोचा था कि तुम्हारे मज़ाक बढ़िया हैं । लेकिन अभी-अभी मेरी समझ में आया है कि जिनसे तुम्हारा बैर है या जिनको तुम पसंद नहीं करते हो, उनका अपमान करने पर तुल जाते हो और निम्न स्तर पर उतर आते हो । अगर तुम समझते हो कि नवतीत में कोई सामर्थ्य नहीं, वह केवल मेरे आश्रय में आने की वजह से ही मंत्री बन पाया है, तो यह सरासर झूठ है, अन्याय है । उसकी सलाह की वजह से मैने शासन-कार्य में बहुत बार फ़ायदा उठाया है । तुम चाहो तो कुछ उदाहरण भी दे सकता हूँ ।"

राजा की इन बातों ने संजीव को आश्चर्य में डुबो दिया । वह अपने आप को धीरे-धीरे संभाल पाया । फिर कहा "प्रभु,क्या वे उदाहरण दरबार में बता सकेंगे?"

राजा रविचंद्र ने व्यंग भरे स्वर में कहा "तुम्हारी बुद्धि बड़ी ही अल्प है । अगर मैं वे उदाहरण दरबार में बताऊँ तो तुम्हारी बदनामी होगी और नवनीत को भी दुख होगा । मालूम नहीं, कौन-सा कारण है, जिसकी वजह से नवनीत के प्रति तुम्हारी बुद्धि कुटिल हो गयी है । उसके बारे में दूसरा कोई मज़ाक हो तो बताना ।"

संजीव ने विनय से कहा "एक बार जब मुझे अल्पबुद्धि का कहा गया है, तो मज़ाक बताना अब मेरे लिए संभव नहीं । अगर आप अनुमति देंगे तो आप पर एक काव्य रचूँगा और अपना स्वग्राम लौटूँगा"

राजा ने उसे बहुत मनाया, पर उसने एक ना सुनी । आखिर 'रविचंद्र विलास' नामक एक काव्य की रचना की, और स्वग्राम लौट पड़ा ।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनाकर पूछा "राजन्, जब तक राजा संजीव की प्रशंसा करता रहा, तब तक अपने परिहासों से उसने बहुत-से लोगों को अवश्य ही थोड़ा-बहुत क्षोभ पहुँचाया है, उनके दिलों को दुखी किया है । लेकिन राजा

ने एक ही बार उसे 'अल्पबुद्धि' का बताया तो उसने परिहास ही छोड़ दिया । पहले राजा के आस्थान के कवि श्वेतकेतु ने जब उससे राजा पर काव्य रचने को कहा, तब उसने साफ़-साफ़ इनकार कर दिया । लेकिन बाद अपने ही आप काव्य की रचना की और राजा को समर्पित किया ।
इसके दो कारण हो सकते हैं । पहला-राजा के क्रोध से भय, दूसरा-धन का मोह । मेरे इन संदेहों की निवृत्ति जानकर भी नहीं करोगे तो तुम्हारा सर फट जायेगा" ।

उत्तर में विक्रमार्क ने बताया "संजीव को, अपने मन में जो आता था,वैसा बताने की आदत थी । मज़ाक बताने के लिए वह किसी से प्रेरित नहीं होता था । वह नहीं चाहता था कि राजा ने उसे जो स्वतंत्रता दी, उसका दुरुपयोग हो । इसलिए जो परिहास राजा को बताना था,वह पहले से ही बता देता था कि किसपर यह परिहास किया जा रहा है? चूँकि नवनीत राजा का प्राणदाता है, राजा को नवनीत पर किया गया यह परिहास अच्छा नहीं लगा । उल्टे उसे 'अल्पबुद्धि' का कहकर उसकी निंदा भी की । जैसे राज्य में सब लोग राजा को निष्पक्षपाती और सहनशील समझते आ रहे थे,वैसे ही उसने भी समझा । जब यह प्रकट हो गया कि उनमें भी पक्षपात है, उनकी भी प्रवृत्तियाँ सामान्य मानव की सी हैं तो उसने उसपर काव्य लिखने का निर्णय किया । क्योंकि इससे वह कम से कम ख्याति नहीं तो धन तो कमा सकता हैं । उसने यह बात भुला भी दी कि राजा के बारे में काव्य लिखने की क्षमता उसमें है या नहीं । जहाँ स्वतंत्रता ना हो वहाँ परिहास तो कर भी नहीं पायेगा, इसलिए राजा पर काव्य लिख दिया और धन लेकर अपने गाँव लौट पड़ा । इन सब कारणों से यह बताने की कोई गुँजाइश नहीं कि संजीव राजा से ड़रता था या धन पर उसका मोह हो गया था ।"

राजा का मौन भंग करने में बेताल सफल हो गया । वह तुरंत शव लेकर चल पड़ा और पेड़ पर चढ़ बैठा ।
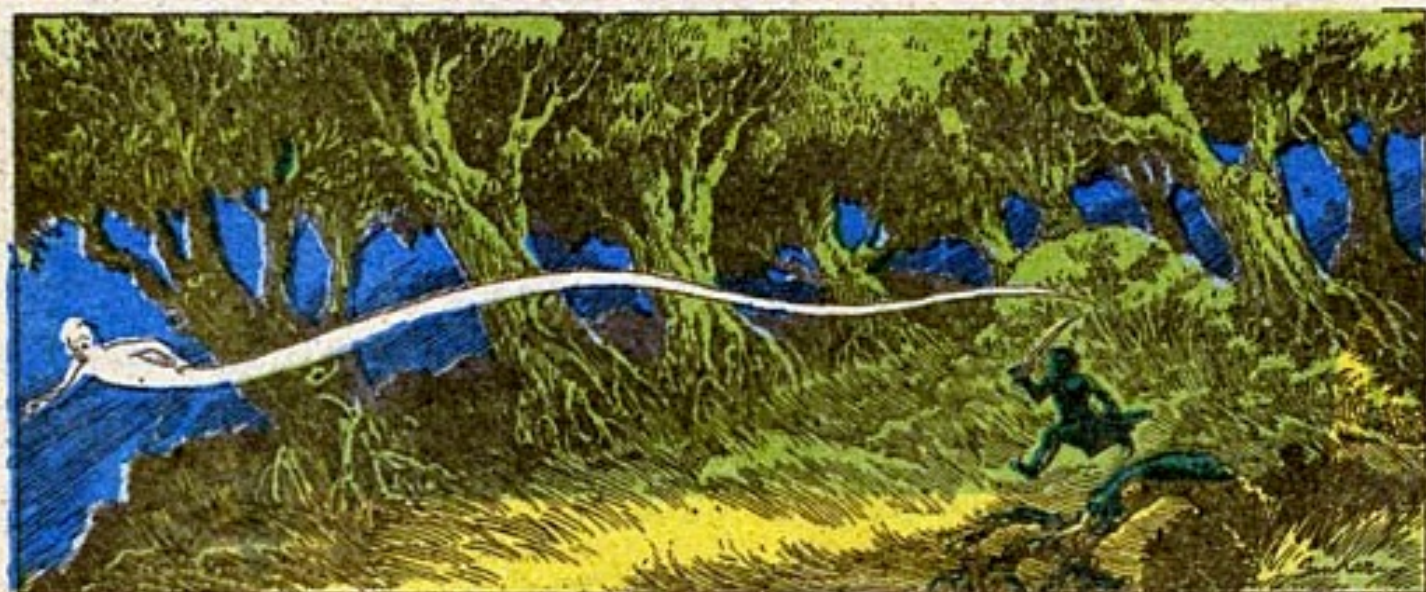
हमारे देश के पशु-पक्षी

सारस पक्षी

पक्षियों में से लगभग पाँच फुट की ऊँचाई तक बढ़नेवाले पक्षी हैं सारस पक्षी । ये बगुले जाति के पक्षी हैं । ये देखने में बहुत ही सुंदर होते हैं । इनका पूरा शरीर कोमल खाकी रंग का होता है । गले का निचला भाग और पंखों के कोने मात्र सफ़ेद होते हैं । गले का ऊपरी भाग व सिर लाल होते हैं । इसके लंबे-लंबे पाँव लाल होते हैं ।

बगुलों में से यह पक्षी बड़ा ही दृढ़ पक्षी है । ये काफ़ी धीरज रखते हैं । इन्सानों को देखकर ये नहीं ड़रते । क़ीड़े-मकोड़े तथा खेतों के अनाज को खाते हुए मनुष्यों के निवासस्थल के समीप ही ये रहते हैं ।

सारस पक्षी सामान्यतया जोड़ी बनकर रहते हैं । कहा जाता है कि जब तक ये जीवित रहते हैं, परस्पर प्यार से रहते हैं । यह भी कहा जाता है कि जब एक पक्षी की मृत्यु होती है तब उसके शोक में दूसरा पक्षी अपने प्राण त्याग देता है । इसलिए नूतन वर-वधुओं को यह कहकर आशीर्वाद दिया जाता है कि 'क्रौंच मिथुन' की तरह जीवित रहो ।

बताते हैं कि उड़नेवाले सब पक्षियों में से सब से ऊँचा पक्षी है सारस पक्षी । धीरे-धीरे ये ऊपर उड़ने लगते हैं । अपने बड़े-बड़े पंखों को फैलाकर बड़ी शान से ये उड़ते जाते हैं । उड़ते समय कभी-कभी विचित्र कंठ से चिल्लाते रहते हैं । सारस पक्षी नमी के प्रदेशों में लकड़ियों और घास की सलाइयों से बड़े-बड़े घोंसले बनाकर रहते हैं । जुलाई-दिसंबर महीनों के बीच में ये अंडे देते है ।

जैमिनी राय

जैमिनी राय के रंगीन चित्रों को पहली ही बार देखते हुए हम मुग्ध हो जाते हैं । ऐसा लगता है मानों वे हमारे चिरपरिचित चित्र हैं । भारतीय लोकशैली तथा आधुनिक पद्धतियों को सम्मिलित करने के कारण हमें ऐसा महसूस होता है । इस प्रकार की विशिष्ट शैली में चित्रांकन करने वाले सुप्रसिद्ध चित्रकार हैं जैमिनी राय ।

पश्चिमी बंगाल के बंकूर जिला, बेलितोल नामक गाँव में, १८८७ में, जैमिनीराय का जन्म हुआ।

अन्य गाँवों की तरह उस समय के बेलितोल गाँव की प्रजा विविध धंधे करती थी और अपनी जीविका चलाती थी। बरतन बनानेवाले, गुड़िया बनानेवाले, बढ़ई का काम करनेवाले, बुनाई का काम करनेवाले, चित्रांकन करनेवालों को घंटों भर राय बड़े ध्यान से देखा करते थे। मख्यतया, कपड़ों पर रंग-बिरंगे चित्र खींचनेवालों का काम बड़ी तल्लीनता से वे देखते थे। ऐसा देखते हुए उन्हें खाने-जीने की भी सुध नहीं होती थी।

उनसे स्फूर्ति पाकर जैमिनी ने स्वयं चित्र खींचना शुरू कर दिया। बालक की रुचि जानकर उनके पिता ने उन्हें कलकत्ते के 'गवर्नमेंट स्कूल आफ आर्ट, में दाखिल किया।

उस पाठशाला में उन्हें अधिकतर पाश्चात्य शैली में चित्रांकन करने की पद्धति सिखायी गयी। जैमिनी ने उसे परिपूर्ण रूप से सीखा। सबों ने उनके नैपुण्य की भरपूर प्रशंसा की। उसी अवधि में वे कोशिश करने लगे कि अपनी अलग विशिष्ट शैली में चित्रांकन करूँ।

जनसामान्य की जीवनी को लेकर, लोकसंप्रदाय पद्धतियों में, साधारणतया उपयोग में लाये जानेवाले रंगों का उपयोग करके, चित्रों को चित्रित करने का काम उन्होंने प्रारंभ किया। इन चित्रों में नूतन शक्ति तथा लय स्पष्ट दीखने लगे। इन चित्रों ने सबों का ध्यान आकृष्ट किया। उनकी इस कला-कुशलता की सब वाहवाही करने लगे।

कितने ही युवा कलाकार जैमिनी राय से प्रभावित हुए। भारतीय चित्रकला संप्रदाय की पद्धतियों को ओर, उनकी दृष्टि को आकृष्ट करने का श्रेय जैमिनी राय को है।

वे १९७२, अप्रैल में दिवंगत हुए।

क्या तुम जानते हो?

१. बंगला देश कब बना?
२. प्रचीन काल में झीलम नदी का एक दूसरा नाम भी था। जानते हो, वह क्या है?
३. द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद (१९४५) जर्मनी का विभाजन पूरबी और पश्चिमी जर्मनी के रूप में हुआ। उसके बाद फिर एक हो गये। जानते हो, वे कब एक हो गये?
४. 'नल सरोवर' नामक पक्षियों का शरणालय किस राष्ट्र में है?
५. 'पवित्र रोमन साम्राज्य' में 'पवित्रता नहीं' ''साम्राज्य भी नहीं', कहते हुए इसका निर्मूल संसार के किस नेता ने किया?
६. 'सिक्किम' हमारे देश का २२ वाँ राज्य कब बना?
७. कौन-सा नक्षत्र सूर्य से भी २८ गुना अधिकतर प्रकाशवान है?
८. हमारे संविधान के अनुसार राजभाषाएँ कितनी हैं?
९. प्राचीन ग्रीक की क्रीड़ाओं तथा आधुनिक ओलंपिक क्रीड़ाओं के मध्य लगभग २,५०० का अंतर है। पहली आधुनिक क्रीड़ाएँ कब हुईं?
१०. शून्य को एक अंक के रूप में उपयोग में लानेवाला प्रथम भारतीय शास्त्रज्ञ कौन है?
११. चिकित्सा के लिए अधिकतर उपयोग में आनेवाले पेड़ का नाम क्या है?
१२. संसार भर में सबसे छोटा राज्य कौन-सा है?
१३. पल्लवों से निर्मित सुप्रसिद्ध मंदिर का नाम क्या है?
१४. वह कौन-सा देश है, जहाँ १३,००० द्वीप हैं।
१५. आज के सुप्रसिद्ध अणु-शास्त्र के वैज्ञानिक डा. रामन्ना एक और दूसरे विषय में भी प्रसिद्ध हैं। किस विषय में?

उत्तर

१. १९७१ मार्च २१।
२. वितस्ता।
३. १९९०, अक्टोबर, ३।
४. गुजरात।
५. नेपोलियन बोनापार्ट (१८०६)।
६. १९७५
७. सिरियस
८. पंद्रह
९. १८९६
१०. ब्रम्हगुप्त
११. नीम का पेड़
१२. वाटिकन नगर
१३. महाबलिपुरं के समुद्र-तट का मंदिर
१४. इंडोनेशिया
१५. पियानो विद्वान

अक्षरशिल्पी

रामदास जंगल के निकट के एक गाँव में रहता था। वह लकड़ियाँ काटकर अपनी रोटी कमाता था। मंगा उसकी पत्नी थी और शिव उसका वेटा।

अपने बचपन में रामदास की बड़ी इच्छा थी कि मैं खूब पढ़ूँ और लिखूँ। पर उसके पिता को यह पसंद नहीं था। वह अपने साथ जंगल ले जाता और उसे सिखाता कि लकड़ियाँ कैसे काटनी हैं। बडे होने पर रामदास की शादी हो गयी और उसका बेटा भी हुआ। अब वह नहीं चाहता था कि उसका बेटा अपने साथ आकर लकड़ियाँ काटे। वह उसे किसी पेशे में लगे हुए देखना चाहता था। इसलिए अपने बेटे शिव को ग्राम के एक साधारण स्कूल में भर्ती कराया।

शिव की पढ़ने-लिखने की इच्छा नहीं थी। उसे उसमें कोई अभिरुचि नहीं थी। वह खेल-कूद में अपना अधिक समय बिताता था। एक दिन रामदास लकड़ियाँ लिये जंगल से वापस आ रहा था तो रास्ते में उसे शिव के अध्यायक मिला। उसने रामदास से कहा "तुम तो अपने बेटे को खूब पढ़ाने की इच्छा रखते हो। लेकिन लगता है, वह पढ़ना नहीं चाहता। अच्छा होगा, एक बार तुम उसे खूब डाँटकर देखना।" यों अध्यापक ने शिव के बाप को सावधान किया।

जैसे ही रामदास घर लौटा, बेटे शिव को बुलाया और पूछा "अरे शिव, क्या यह सच है कि तुम्हें पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं है? तुम्हारे अध्यापक ने मुझे खुद बताया है।" "हाँ, मैं पढ़ना नहीं चाहता। मैं भी तुम्हारे साथ जंगल आऊँगा और लकड़ियाँ काटूँगा" शिव ने जवाब दिया।

बेटे की इन बातों से रामदास बहुत ही नाराज़ हुआ और उसे खूब पीटा। शिव इससे बेकाबू होते हुए बोला "तुमने मुझे
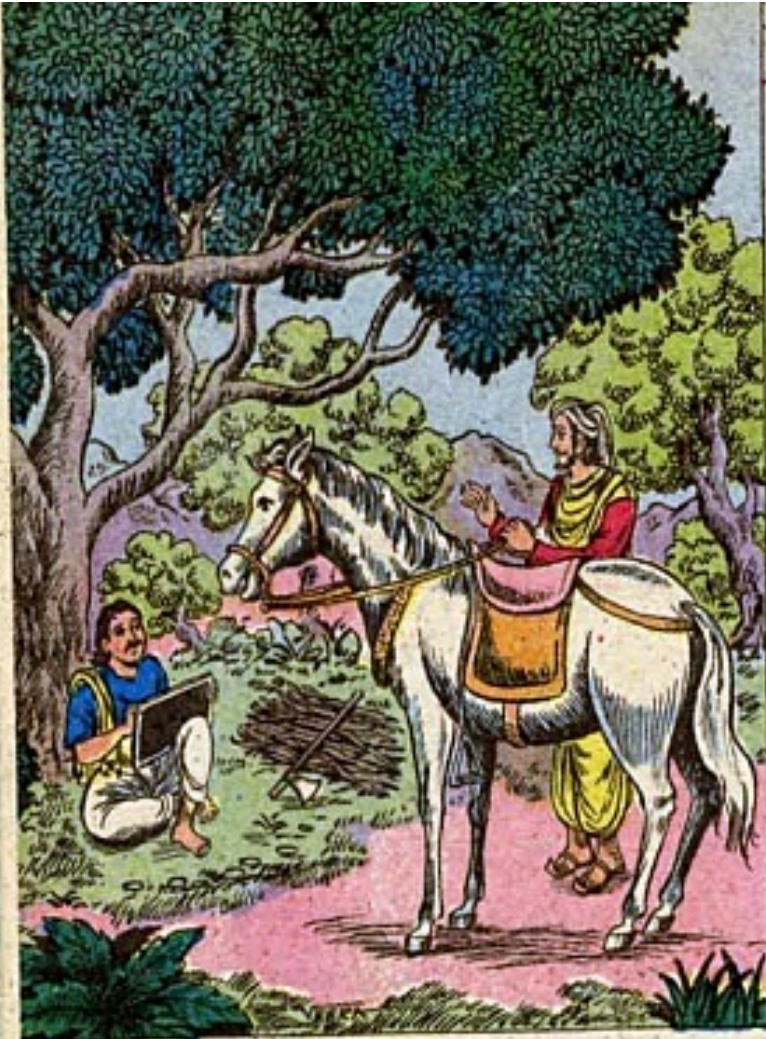
इसलिए मारा है कि मुझे पढ़ाई नहीं आती, पर तुम्हें तो अक्षर भी नहीं आते ।"

इस उत्तर से रामदास के आत्माभिमान को धक्का लगा । उसने अपनी पत्नी से कहा "देखा, मेरे बेटे ने मेरी खिल्ली उड़ायी है कि मुझे पढ़ना नहीं आता । अगर मैं पढ़ पाता तो कितना अच्छा होता ।"

मंगा ने अपने पति को समझाते हुए कहा "बच्चा है, अनजाने में कुछ बक गया । अब भूल जाओ और मेरा कहा मानो । अपने बचपन में थोडा-बहुत पढ़ चुकी हूँ । तुम्हें जो सीखना है, मुझसे सीख ।" रामदास चकित होता हुआ बोला "पढ़ना आसान थोड़े ही है? वह भी इस उम्र में ।"

"पढ़ाई की कोई उम्र नहीं होती । आग्रह हो तो कोई भी काम साधा जा सकता है ।" मंगा ने कहा । उसी दिन रात को उसने तख्ती पर अक्षर लिखे और अपने पति से लिखवाये । रामदास बहुत रात तक अक्षर लिखता रहा, इसलिए सबेरे-सबेरे वह जाग नहीं पाया । चढ़ते हुए सूरज को देखा और घबरा गया । बिना कुछ खाये-पिये कुल्हाड़ी लेकर जंगल की ओर चल पड़ा ।

एक सप्ताह तक ऐसा ही होता रहा । रामदास ने पढ़ाई छोड़ देने की ठानी, पर उसकी पत्नी ने साफ़ इनकार कर दिया । अपने पति से उसने कहा "मैं तख्ती पर अक्षर लिख दूँगी । लकड़ियाँ काटने के बाद जब थक जाओगे, तब थोड़ी देर के लिए ही सही, आराम तो करोगे ना, तब इन अक्षरों को सीखना" । यों उसने अपने पति को सलाह दी । रामदास को पत्नी की यह सलाह अच्छी लगी और वह उसे अमल में लाया ।

एक दिन दुपहर को एक घुड़सवार मुसाफ़िर जब उस जंगल से गुज़र रहा था, तो उसने देखा कि रामदास ने पेड़ से लटकती हुई तख्ती ली और अक्षर लिखता जा रहा था । रामदास के इस काम पर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ ।

मुसाफ़िर जानना चाहता था कि आख़िर बात है क्या? वह रामदास के पास आया और बोला "क्योंजी, आख़िर तुम जंगल क्यों आये? लकड़ियाँ काटने या अक्षर सीखने?"

रामदास ने कहा "महाशय, बचपन से ही पढ़ने-लिखने की मेरी बडी तमन्ना है ।"

कहते हुए उसने मुसाफ़िर से सब कुछ बताया, जो गुज़रा था । मुसाफ़िर ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा "बहुत अच्छा कर रहे हो । किसी भी हालत में अपना आग्रह छोडना नहीं ।" उसने रामदास का नाम, उसका पता आदि पूरा विवरण जाना ।

इस घटना के घटने के चार महीनों के बाद एक दिन जब रामदास जंगल से वापस आया तब उसकी पत्नी मंगा ने उससे कहा "याद है, तुमने एक बार मुझसे कहा था कि जंगल से गुज़रते हुए एक मुसाफ़िर ने तुम्हारी पढ़ाई के प्रयत्न की काफ़ी प्रशंसा की है । उसने कितावें भेजी हैं । उसने यह भी कहलवाकर भेजा है कि तुम अच्छी तरह पढ़-लिखकर ज्ञानी बनो ।"

उस दिन से रामदास में बड़ा परिवर्तन हुआ । रातों में बैठता और अक्षर व वाक्य धीरे-धीरे जोड़ता हुआ पुस्तक पढ़ता जाता । शिव अपने पिता की लगन को गौर से देखने लगा और वह भी बडी श्रद्धा से पढ़ने लग गया । उसकी शिक्षा में प्रगति होने लगी ।

एक दिन रामदास ने जो पढ़ा, उसमें उसे एक संदेह हुआ । अपनी पत्नी से इस संदेह का जब उसने ज़िक्र किया तो उसने कहा "अब मुझसे पूछने से कोई फ़ायदा नहीं है । क्योंकि तुम्हारा ज्ञान अब मेरे ज्ञान से काफ़ी बढ़ गया है । अब अपने संदेहों का समाधान पंडित विष्णुशर्मा से पूछकर ही पा सकते हो ।"

एक दिन रामदास जब जंगल से लौट रहा
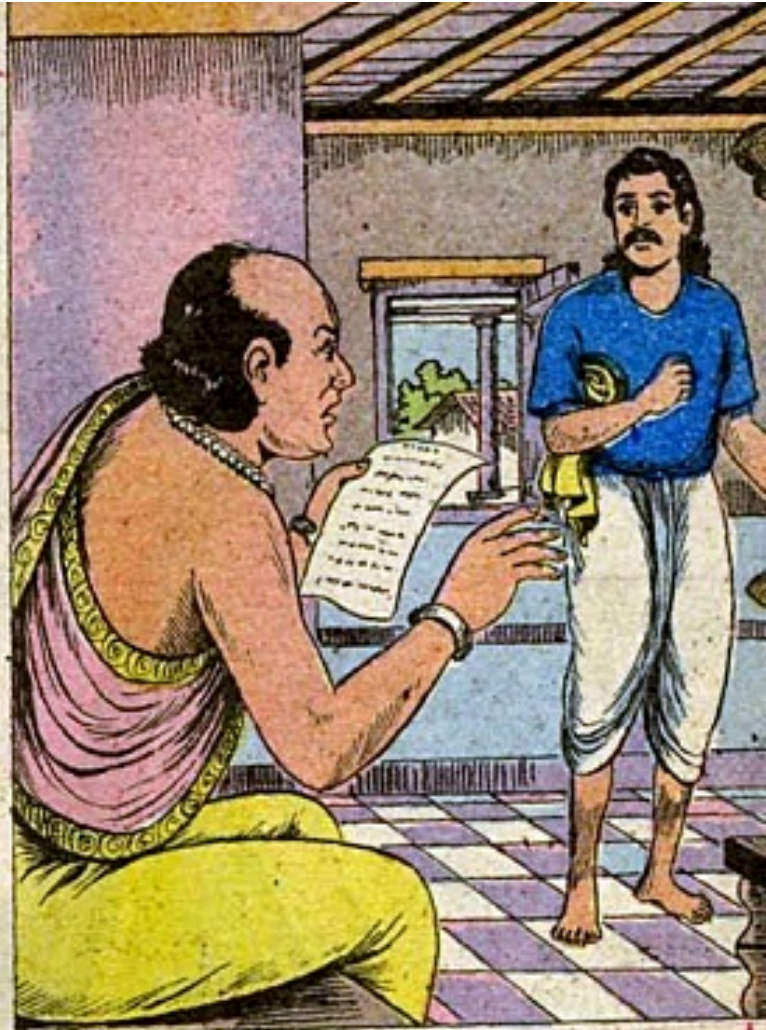
था तो पेड़ की ड़ाली पर बैठी कोयल ने कूक भरी । बेटा शिव भी साथ था तो उसने भी कोयल की तरह ध्वनि की । कोयल ने उत्तर में और ज़ोर से ध्वनि की । उस क्षण रामदास के मन में नये-नये भाव जगे । ऐसे तो उस जंगल को रोज़ देखता था परंतु आज वह जंगल उसे नया लगने लगा । हरे-भरे पेड़, विकसित फूल, कोमल घास, चहकते हुए पक्षी, उसे देखते हुए छलांग मारकर भागते हुए जंतु सब रामदास के मन को उत्तेजित कर रहे थे । नयी-नयी प्रेरणाओं से भर रहे थे । जैसे ही रामदास घर पहुँचा, अपने मन की सारी भावनाओं को कागज़ पर लिख लिया । एक बार जब उसे पढ़ लिया तो उसे बेहद खुशी हुई । उसी दिन

आगे से कभी भी उनके पास मत जाना ।"

इस घटना के दो महीनों के बाद कुछ राजभट गाँव में आये और उन्होने घोषणा की "संक्राति के दिन महाराज ने राजधानी में कविताओं की स्पर्धाओं का आयोजन किया है । विजेताओं को बहुमूल्य पुरस्कार भी प्रदान किये जाएँगे ।"

मंगा ने अपने पति को सुझाव दिया "तुम भी स्पर्धाओं में भाग लो और अपनी कविताए महाराज को सुनावो । हो सकता है, तुम्हें पुरस्कार ना मिले । किन्तु कम से कम दूसरों की कविताएँ सुनकर अपनी कविताओं को सुधार तो सकते हो ना" मंगा ने उसे समझाते हुए कहा ।

पत्नी का यह सुझाव रामदास को सही लगा । संक्रांति के दिन, जो अच्छे कपड़े अपने पास हैं, पहनकर वह राजभवन पहुँचा ।

महाराज सिंह भूपति ने उपस्थित कवियों और सज्जनों को संबोधित करते हुए कहा "आज तक पंडित ही कविताएँ सुनाया करते थे । लेकिन जनता में भी कवि होते होंगे, जिनमें कविता रचने की अपार शक्ति है । परंतु यह शक्ति प्रकाश में नहीं आ पायी । यही कारण है कि मैने ढिंढोरा पिटवाया, जिससे ऐसे कवियों को भी अपनी कविता सुनाने का मौक़ा मिले । नित्संकोच आप सब अपनी-अपनी कविताएँ सुनाइये ।"

एक-एक करके कवि अपनी कविताएँ सुनाने लगे । जब रामदास की बारी आयी तो उसने 'माँ जंगल' नामक एक कविता

उसे विष्णुशर्मा को दिखाया ।

विष्णुशर्मा ने उसे पढ़कर कहा "अरे, तुमने तो कविता लिखना शुरू कर दिया है । ऐसे पगले काम करने लगोगे तो खाने के लिए खाना भी नहीं होगा । लकड़ियाँ काटो और आराम से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो ।"

विष्णुशर्मा की इस बात से रामदास के मन को ठेस लगी । पत्नी को यह बात बतायी तो उसने कहा कि ज़रा पढ़कर तो सुनाओ कि तुमने क्या लिखा है? पूरा सुनने के बाद उसने पति से कहा "तुमने तो बहुत ही बढ़िया लिखा है । शर्माजी को तो तुम्हारी प्रशंसा करनी चाहिए उल्टे उन्होंने तुम्हारा मज़ाक उड़ाया है । अवश्य हीं तुम्हारी प्रतिभा को देखकर उन्हें तुमसे ईर्ष्या हुई होगी । अब

सुनायी। उस कविता में जंगल का वर्णन बड़े ही रोचक, सहज और आकर्षक ढंग से किया गया था। हर्षध्वनियों के बीच में निर्णायकों ने घोषित किया कि रामदास की कविता सर्वश्रेष्ठ है।

रामदास इन निर्णय पर बहुत ही आनंदित हुआ। राजा सिंह भूपति ने रामदास को बधाई दी और जब पुरस्कार प्रदान करने जा रहे थे, तो रामदास ने कहा "महाराज, इस क्षण आनंद के साथ-साथ मुझे थोड़ा दुख भी हो रहा है।" कहते हुए उसका जंगल में लकड़ियाँ काटना, अक्षर सीखना, और खूब पढ़ने के लिए प्रोत्साहन देने तथा पुस्तकें भेजनेवाले व्यक्ति की प्रशंसा करते हुए उसने कहा "उस महान व्यक्ति का नाम व पता भी मैं नहीं जानता। मुझे इस बात का दुख है कि इस खुशी के मौके पर मैं उन्हें अपनी कृतज्ञता भी प्रकट नहीं कर पा रहा हूँ"।

इसपर राजा मंद मुस्कान भरते हुए बोला "रामदास, वह मुसाफ़िर मैं ही हूँ।"

राजा ने रामदास की पीठ थपथपायी और सबसे कहा "एक बार बहुरूपिये के वेष में जब मैं देश में भ्रमण कर रहा था तब मैंने रामदास को जंगल में देखा। वह लकड़ियाँ काटता जाता और बीच-बीच में अक्षर भी सीखता जाता था। शिक्षा के प्रति एक मेहनती और वयस्क व्यक्ति की श्रद्धा देखकर मैं बहुत ही संतुष्ट हुआ। इसीलिए राजधानी लौटने के बाद अच्छी पुस्तकों का चयन करके मैंने उसे भेजा है। फिर जब मुझे मालूम हुआ कि कविता रचने की योग्यता भी उसने पायी है तो मुझे बड़ा ही हर्ष हुआ। कहा जाए तो इन कविताओं की स्पर्धाएँ चलाने का कारण भी एक तरह से रामदास ही है। आज अपने आग्रह के कारण ही वह अक्षरशिल्पी में परिवर्तित हुआ है। अक्षरों को सुँदर शिल्पोंमें मोड़कर बड़ी ही सुँदर कविताएँ रच रहा है।"

फिर राजा ने रामदास का सम्मान किया। जिस गाँव में वह रहता था, वहीं उसे दान में थोड़ी-सी ज़मीन भी दी और उसे बिदा किया।

प्रतिफल

किसान वीरभद्र, अपने पिछवाड़े में कुआँ खुदवाने के प्रयत्न में था। यह जानकर केशव वीरभद्र से मिला और बोला "सुना है, आप कुआँ खुदवाना चाहते हैं। वह काम आप मुझे सौंपिये। भूमि के अंतराल में जहाँ कहीं भी पानी हो, मैं आसानी से पता लगा सकता हूँ। मैंने यह विद्या अपने पुरखों से सीखी है। बिना किसी प्रयास के मैंने कितने ही कुएँ खुदवाये हैं"।

वीरभद्र कुछ बताने ही वाला था कि इतने में वहाँ बैठे वीरभद्र की बातें सुनते हुए पड़ोसी रामनाथ ने कहा "वीरभद्रजी, आप इस गाँव के लिए नये हैं। आपको इस केशव के बारे में कुछ भी मालूम नहीं, इसलिए आपको बताना मेरा कर्तण्य है कि कुआँ खुदवाने का काम इसे अवश्य सौंपिये। इस काम में यह बहुत ही प्रतिभावान है।"

वीरभद्र ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा "रामनाथजी, कभी-कभी तो हमारी आँखों के सामने जो चीज़ है, वही साफ़-साफ नज़र नहीं आती तो भला यह कैसे संभव है कि भूमि के अंतराल में पड़ा पानी नज़र आये? फिर केशव से कहा "मैंने कहानियों में पढ़ा है कि आँखों में अंजन पोतकर या मायावी दूरबीनों से मांत्रिक पता लगाते थे कि भूमि के अंदर क्या है? लेकिन मैं ऐसी विद्याओं में विश्वास नहीं रखता। मज़दूरों से मैं स्वयं ही पिछवाड़े में कुआँ खुदवा लूँगा।"

केशव ने वीरभद्र को समझाने की कोशिश की कि जो काम वह करना चाहता है, उसमें तांत्रिक शक्तियों के उपयोग का सवाल ही नहीं उठता। वह जो भी करेगा, शास्त्रीय ढंग से ही करेगा। फिर भी वीरभद्रने उसकी बातों को अनसुनी कर दी।

आख़िर केशव "आपकी जैसी इच्छा" कहकर चला गया। दूसरे ही दिन भद्र ने

जे. रत्ना

मज़दूरों को बुलाया और पिछवाड़े के एक कोने में एक कुआँ खुदवाने का काम शुरू कर दिया । दस दिन खोदने के बाद उन्हें एक बड़ी चट्टान रुकावट बनकर रह गयी, जिसकी वजह से काम रोक देना पडा ।

मज़दूरों ने यह बात वीरभद्र को बतायी और कहा "अजी, इस चट्टान को हटाकर और गहरा खोदना हमारे बस की बात नहीं है । अगर हम यह कर भी पाएँ तो इसकी कोई उम्मीद भी नहीं कि वहाँ पानी निकलेगा । इसलिए हमारी मज़दूरी हमें दे दीजिये । कहीं और काम ढूँढ़ लेंगे ।"

जो हुआ, उसपर वीरभद्र बहुत ही दुखी हुआ । उसने उनकी मज़दूरी दी और बिदा किया । फिर पड़ोसी रामनाथ से कहा "समझ में नहीं आता, अब क्या करूँ?"

रामनाथ ने कहा "पहले ही आप मेरा सुझाव मानते तो अच्छा होता । जो नुकसान हुआ, उसे भूल जाइये । केशव को बुलवायेंगे तो काम हो जायेगा ।"

कोई और चारा नहीं था, इसलिए वीरभद्र ने केशव को ख़बर भेजी । वह आया और पूरा पिछवाड़ा छान डाला । वहाँ के छोटे-छोटे पौधों और घास को खूब परखा और उत्तरी दिशा में कुदाल भूमि के अंदर ड़ाली । फिर वीरभद्र से कहा "महाशय, कुआँ खोदने की यही सही जग्ह है । मैं कल खुद मज़दूरों को ले आऊँगा और खुदवाने का काम पूरा करूँगा ।"

दूसरे दिन वह मज़दूरों के साथ आया और

उस जगह को दिखाते हुए कहा "यहीं खोदो ।"

तीन दिन तक मज़दूर कुआँ खोदने के काम में लगे रहे । चौथे दिन ज़मीन से बड़ी मात्रा में पानी निकलने लगा ।

इसपर वीरभद्र को खुश देखकर केशव बोला "पहले ही कुआँ खुदवाने का काम मुझे सौंपते तो व्यर्थ के ख़र्च से आप बच जाते । आपने मेरी बातों का इतमीनान नहीं किया । मैने जो सोचा, उससे अधिक ही पानी का प्रवाह हो रहा है । मुझे मेरी रकम दिलाएँगे तो चला जाऊँगा ।"

'कहिये, रकम कितनी है?' वीरभद्र ने पूछा । "कुल मिलाकर पाँच सौ रुपये" केशव ने कहा ।

यह सुनकर वीरभद्र चिढ़ता हुआ बोला "दो दिनों में काम पूरा हुआ है। फिर भी पाँच सौ क्यों?"

केशव ने शांत होते हुए उत्तर दिया "महाशय, उसमें तीन सौ रुपये मज़दूरों की मज़दूरी है। बाक़ी एक सौ मेरे हैं, क्योंकि मैंने ही पता लगाया है कि कहाँ ख़ोदने पर पानी होगा। यह मेरा प्रतिफल है। आपने खुद देखा कि इस काम में मैंने कोई मंत्र-तंत्रों का प्रयोग नहीं किया।"

वीरभद्र, केशव की बातों से शरमा गया और घर के अंदर जाकर रक़म ले आया और उसे दे दी।

उस समय पड़ोसी रामनाथ वहाँ आया और जो भी हुआ, जान लिया। उसने वीरभद्र से कहा "पहले ही आप मेरी बात सुनते तो आपको यह कष्ट उठाना ना पड़ता। पिछवाड़े में व्यर्थ ही आपने मज़दूरों से कुआँ खुदवाया। इस बंजर ज़मीन पर, मालूम नहीं, पानी होगा कि नहीं। इसलिए केशव जैसे शास्त्रीय पद्धति से काम करनेवाले की सहायता लेना आवश्यक है। आप इस ग़लतफ़हमी में मत रहिये कि यह अंधविश्वास है। अब बोलिये, मेरा कहना ठीक है या नहीं।"

"अभी कहने के लिए रखा ही क्या है? इस क्षण से अपनी मूर्खता से भरे विचारों को त्यागता हूँ।" वीरभद्र ने कहा।

कुआँ खुदवाने की यह पद्धति हमारे देश में बहुत ही प्रचलित होती आ रही है। पुरानी विचारधाराओं के लोग इस पद्धति को स्वीकार करने से इनकार करते हैं। सच कहा जाए तो यह एक शास्त्रीय पद्धति ही कही जा सकती है। इसमें अनुभव रखनेवाले व्यक्ति ऊपर की सतह की मिट्टी तथा उसपर उगनेवाले घास, पौधे आदि को देखकर जान पाते हैं कि यहाँ कितनी गहराई में पानी होगा। इस पद्धति पर विश्वास रखकर कुआँ खुदवाने से व्यर्थ के परिश्रम तथा व्यय से बच सकते हैं।

राम के राज्य-काल में उत्तरी दिशा में गंधर्वों ने फैलकर लोगों को बाधाएँ पहुँचाना शुरू कर दिया। भरत सेना को लेकर गया और घोर युद्ध किया, जिसमें गंधर्व बुरी तरह से हार गये। अब गंधर्वों के अत्याचारों से मुक्त होकर प्रजा सुख से रहने लगी। इसके उपरांत पश्चिमी दिशा में लवणासुर नामक राक्षस प्रलय की तरह अंधाधुंध ध्वंस के कार्यों में लग गया। राम ने शत्रुघ्न को दिव्यास्त्र दिये और आज्ञा दी कि लवण को समाप्त कर दो। राम ने सोचा कि शत्रुघ्न के साथ विभिषण भी रहे तो उत्तम होगा। क्योंकि राक्षसी मायाओं से परिचित विभीषण ही उसका प्रत्युत्तर दे पायेगा। इसलिए राम ने हनुमान को भेजकर विभीषण को अपने यहाँ बुलाया। विभीषण राक्षस वीरों को अपने साथ ले आया। शत्रुघ्न और विभीषण अपनी सेना व राक्षस वीरों को लेकर लवणासुर से युद्ध करने चल पड़े।

सुदर्शन चक्रायुध की तरह शत्रुघ्न शत्रु-सेना पर टूट पड़ा और उनका ध्वंस करता गया। इस युद्ध में राक्षस सेना ने भी अपना अपूर्व पराक्रम दिखाया। शत्रुघ्न ने स्वयं लवणासुर से युद्ध किया और उसे परलोक भेज दिया। विजय प्राप्त करके शत्रुघ्न और विभीषण अपनी सेना सहित अयोध्या लौटे।

एक दिन राम सभा में आकर सिंहासन पर आसीन हुआ। बायीं ओर सीता बैठी हुई थी। राम के सम्मुख हनुमान, भरत,

लक्ष्मण, शत्रुघ्न, सुग्रीव, अंगद, नल, नील, जांबवंत, विभीषण, वसिष्ठ, वामदेव आदि आसीन थे ।

उस समय वहाँ सभा में अगस्त्य महर्षि पधारे । राम ने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और उनका अतिथि-सत्कार किया । फिर उनके कुशल समाचार पूछा ।

अगस्त्य ने उत्तर में कहा "दुष्ट को दंड देने और शिष्ट की रक्षा करने के लिए जब तुम उपस्थित हो तो भला हम सकुशल क्यों ना होंगें? तुमने दस सिरवाले रावण का संहार करके बड़ा ही यश अवश्य प्राप्त किया है, परंतु मेरी यह बात भी ध्यान से सुनो । तिक्त समुद्र के उस पार मायानगर नाम की राजधानी में, शतकंठ नामक एक राक्षस, तुम पर विजय पाने की योजनाएँ बना रहा है ।"

राम ने बड़े ही आश्चर्य से पूछा कि "महर्षि, आप कृपया उसकी कथा सुनाइये ।" तो अगस्त्य ने यों कहा ।

"कश्यप की वसु नाम की एक पत्नी थी । वह असुरसंध्या की बेला में गर्भवती हुई । शतकंठ नामक एक अति विकृत आकार को उसने जन्म दिया । ब्रह्मदेव की उसने घोर तपस्या की । ब्रह्मा उसकी इस घोर तपस्या पर बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे ऐसे-ऐसे वर प्रदान किये, जिनकी प्राप्ति देवेंद्र जैसे देवताओं के लिए भी असाध्य है । उससे वह अपने को अजेय मानकर तीनों लोकों को अपने अधीन करने के सपने देखने लगा हैं । राम, तुम्हें युद्ध में उसका संहार करना होगा ।"

राम क्षण भर सोचता रहा और फिर महर्षि अगस्त्य से पूछा "देखने में वह कैसे लगता हैं?"

"वह कैसे भी हो, तुम्हारे बाणों के सामने टिकेगा कैसे? तुम्हारे बाण तो असाध्य को भी साध्य करते हैं । वह रावण से दस गुना अधिक वीर है । उसका संहार कैसे करना है, तुम्हें किसी और को बताने की आवश्यकता ही नहीं है ।" अगस्त्य ने कहा ।

अगस्त्य के चले जाने के बाद राम ने अपने भाइयों को संबोधित करते हुए कहा "रावण, कुम्भकर्ण आदि राक्षसों का

युद्ध में संहार करके बहुत ही थक गया हूँ। भरत ने गंधर्वों से युद्ध किया तो शत्रुघ्न ने लवणासुर से। वे दोनों भी काफ़ी थके हुए हैं। अब तो हमारे सम्मुख प्रश्न यह है कि समुद्रों के उस पार स्थित उस राक्षस शतकंठ को परलोक भेजने का भार किसे सौंपें? सौ योजन (चार कोस की दूरी) के समुद्र को पार करना कष्टतर कार्य है। अब सोचो, हम करें क्या?"

तब अकस्मात सामने बैठे हुए हनुमान पर राम की दृष्टि पड़ी। तक्षण उसने कहा "हनुमान, यह कार्य केवल तुम ही कर सकते हो। तुम तो एकपाद रुद्र हो।"

तब हनुमान ने राम से कहा "आपके सम्मुख राक्षसों की क्या हस्ती? आप मेरी भुजाओं पर चढ़ कर निकल पड़िये और उन राक्षसों का सर्वनाश कीजिये।"

राम ने हनुमान को आलिंगन में लिया और कहा "तुममें जो शूरता और पराक्रम है, भला वे किसी दूसरे में कहाँ?" यों उसकी प्रशंसा की।

यह सब सुनती हुई सीता ने राम से कहा "आपने इसे एकपाद रुद्र कहा है। रुद्र ने बंदर का रूप धारण किया है और इसका कारण क्या है?"

सीता के प्रश्न का उत्तर राम ने यों दिया।

एक बार महारुद्रगण ब्रह्मांड को शासित करनेवाले एकपाद रुद्र की सेवा में मग्न थे, तब उसने अपने ध्यान की शक्ति से महाविष्णु के रूप को देखा। उसने सोचा कि कभी

ना दीखनेवाला वह रूप मेरी रक्षा करनेवाले ईश्वर का ही रूप होगा। वह तक्षण वहाँ से निकल पड़ा। विश्व का पूरा भ्रमण किया और भूलोक में आकर शिव में विलीन हो गया। उस शिव के अंश से ही इस हनुमान का जन्म हुआ है।

राम ने अच्छी तरह सोचा-विचारा और स्वयं शतकंठ से युद्ध करने के लिए सन्नद्ध हो गया। सीता ने कहा कि मैं भी आपके साथ आऊँगी। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुग्रीव, विभीषण तथा सेना युद्ध करने निकल पड़े। राम ने हनुमान के लिए ढूँढ़ा तो देखा कि हनुमान ने विश्वरूप धारण किया है और वह भूमि, आकाश व समस्त दिशाओं में व्याप्त हो गया है। उसके संपूर्ण रूप को

देखना किसी के लिए संभव नहीं हुआ । भय और आश्चर्य से उस रूप को देखते हुए सब स्तब्ध रह गये ।

हनुमान भूमि की तरफ़ झुका । राम और सीता को अपने कंधों पर बिठाया और शेष सभी से कहा कि तुम लोग भी मेरी भुजाओं पर बैठो । राम की सेना को अब पैदल चलने का कष्ट उठाना नहीं पड़ा । वे हनुमान की भुजाओं पर बैठकर आकाश-मार्ग में जाने लगे । आकाश में अग्रसर होता हनुमान मेरु पर्वत की तरह दिखायी देने लगा ।

हनुमान जब चारों समुद्रों को लांघकर जाने लगा तब राम सीता को एक-एक सुमद्र दिखाने लगा । आखिर शतकंठ का मायानगर दिखाई पड़ा । उस नगर के चारों ओर सुवर्ण प्राकार था । इन समुंदरों को इतनी सुगमता से लाँघ पाना केवल हनुमान के लिए ही संभव हो पाया था । और किसी के लिए तो यह असाध्य कार्य है ।

मायानगर में, लंका नगरी में जैसा उद्यान था, पर यह उद्यान उससे भी सुँदर था । राम ने हनुमान से उस उद्यान में उतरने को कहा । सेना भी वहीं उतरी । राम ने सुग्रीव आदि को आज्ञा दी कि आप लोग उस राक्षस पर आक्रमण कीजिये ।

तक्षण ही सुग्रीव, अंगद, विभीषण आदि महाशूर अपनी सेनाओं के साथ शतकंठ के नगर पर आक्रमण करने चल पड़े । वानर व राक्षस सेना दोनों दुर्ग के पास पहुँचीं । क़िले के चारों तरफ जो गड्ढा था, उसको समतल बनाया । दुर्ग की दीवारें तोड़ीं, गोपुरों को ध्वंस किया, और द्वारों को धराशायी करने के काम में वे लग गये ।

कालकेय उस दुर्ग के रक्षक हैं । बंदर और राक्षसों के इन कृत्यों को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ । वे परस्पर कहने लगे "शायद इन्हें मालूम नहीं कि इस दुर्ग का अधिपति शतकंठ है । ये लोग भला कैसे सोच पा रहे हैं कि अपने प्राण बचाकर यहाँ से सुरक्षित निकल पायेंगे?" वे फिर सिंहनाद करने लगे ।

कुछ विलंब किये बिना कालकेयों ने विविध प्रकार के हथियार लिये और वे वानर और राक्षस सेना पर टूट पड़े । उनके सामने वानर सेना टिक ना पायी और तितर-बितर

"क्या लोग यह सुनकर नहीं हँसेंगे कि कोई राजा बंदर पर बैठा आया है और वानर सेना को लिये हमसे युद्ध करने लगा है? जब देवता ही मेरे सामने नत-मस्तक हो जाते हैं, तो इस राजा को यहाँ वानरसेना के साथ आने का साहस कैसे हुआ?" कहते हुए शतकंठ ने अपने मंत्रियों, सेनाधिपतियों आदि को बुलाकर उनसे कहा कि युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जाओ। रणभेरी बजायी गयी और सब युद्ध करने निकल पड़े।

युद्ध के लिए आये हुए शतकंठ का मुकुट, अलंकारों की कांति, उसका शरीर और दर्प देखता ही रह गया राम।

यह देखकर हनुमान ने कहा "स्वामी, उसको देखकर आप क्यों इतना चकित हो रहे हैं? आपकी शूरता के सामने इस राक्षस की क्या गिनती? उसका संहार कर दीजिये।" कहते हुए उसने शतकंठ की विशाल छाती में ज़ोर से मुक्का मारा।

उस मार से हतप्रभ हो शतकंठ नीचे गिर पड़ा। लेकिन तुरंत उठ गया और सामने खड़े हनुमान को देखकर बोला "वाह, कितने बलशाली हो तुम। हे वानर, तीनों लोक मुझसे थर्रा जाते हैं और ऐसे मुझी को एक मुक्का मारकर तुमने गिरा दिया। मैंने कितने ही देवताओं को युद्ध में हराया है और अपनी अद्भुत शक्ति का प्रमाण दिया है। लेकिन आज तक किसी ने मुझे तुम्हारी तरह गिराया नहीं है। तुम्हारे मुक्के की शक्ति देखी है। अब इस शूल की शक्ति

हो गयी। विभीषण ने वानर सेना को रोका और अपनी राक्षस सेना को उनपर आक्रमण करने की आज्ञा दी। वानर सेना ने फिर से साहस बटोरा और राक्षस सेना के साथ शत्रुओं से युद्ध करने में जुट गयी। युद्ध तीव्र होता गया।

शतकंठ उस समय शिव की पूजा में मग्न था। युद्ध का कोलाहल जब उसे सुनायी पड़ा तो उसने द्वारपालकों से पूछा "क्या है यह कोलाहल?"

द्वारपालकों ने उसे प्रणाम किया और कहा "स्वामी, कोई राजा बंदर पर बैठकर नर, वानर और राक्षससेना के साथ हमारे यहाँ उतरा है। हमारे कालकेय उनसे युद्ध कर रहे हैं। उसी की ध्वनियाँ हम तक आ रही हैं।"

का मज़ा चखो ।" कहते हुए शतकंठ ने अपने से लंबे और ऊँचे शूल को हनुमान पर छोड़ा । हनुमान ने बडी सुगमता से उस शूल के दो टुकड़े कर दिये

'वाह, वाह' कहते हुए शतकंठ ने कुल्हाड़ी, खड्ग, बर्छी आदि हथियारों का प्रयोग किया । हनुमान ने सबको तोड़ ड़ाला । हनुमान के इस साहस पर राम बहुत ही प्रसन्न हुआ और स्वयं एक धनुष लिये शतकंठ से युद्ध करने आगे बढ़ा । राम के साथ विभीषण भी आया । शतकंठ ने उन दोनों के बाणों को बीच में ही काट ड़ाला । उन्हें पैरों से ऐसा ऊपर उठाया और फेंका कि वे दोनों लंका में जाकर गिरे ।

तब हनुमान ने अपनी पूँछ चारों समुद्रों पर इस प्रकार फैलायी, मानों उसने उनपर पुल बाँध दिया हो । राम और विभीषण दोनों उसपर से होते हुए वापस लौटे । उन्होंने फिर से शतकंठ से युद्ध करना आरंभ कर दिया । वानर सेना राक्षसों पर पेड़ और पथ्थरों की बौछार करने लग गयी । शतकंठ सब के वारों को अपने अस्त्रों से तोड़ता-फोड़ता रहा । उसका पराक्रम देखकर अंगद, नल, नील, ऋक्षज आदि वानर वीर वहाँ से भाग गये । राम के तीनों भाई भी हार गये ।

तब राम, सीता के साथ हनुमान की भुजाओं पर बैठा और शतकंठ से युद्ध के लिए आया । तब शतकंठ ने राम से कहा "मुझसे युद्ध करना, रावण से युद्ध करने के

समान समझ रखा है क्या? बताओ तो सही, इस बंदर पर चढ़कर मुझसे युद्ध करने आये क्यों हो? अपने साथ सीता को क्यों लाये?"

राम ने उसपर अस्त्र फेंके ।राम को लगा कि शतकंठ करोड़ों शतकंठ बनकर सामने खड़ा है । राम के सारे के सारे महान अस्त्र विफल हो गये ।

हनुमान के क्रोध का छोर ना रहा । अपनी प्रचंड शक्ति से उसने शतकंठ की राक्षस सेना का विनाश कर दिया । यह सब देखते हुए राम ने अपना धनुष व तरकश सीता को सौंपा, मानों कुछ क्षणों के लिए वह विश्राम करना चाहता हो । सीता ने उनको लेकर शतकंठ से युद्ध किया । एक स्त्री के उसपर टूट पड़ने से शतकंठ के आत्माभिमान को

ठेस लगी। वह अपना पूरा प्रताप दिखाते हुए युद्ध करने लगा।

"राम सत्यवान हों, मैं पतिव्रता हूँ तो इस बाण से राक्षस की मृत्यु हो" कहती हुई सीता ने बाण छोड़ा। इससे शतकंठ मरकर गिर पड़ा। सीता ने राम को धनुष दे दिया और प्रणाम किया।

राम ने अपने हीरों का हार सीता को दिया। सीता ने राम से प्रार्थना कि वह हार हनुमान को दे दिया जाए, जिसने शतकंठ के पतन में बड़ा ही सहयोग दिया है और उसकी सेना को मृत्यु के घाट उतारा है। राम के दिये हार को हनुमान ने बहुत ही हर्षित होते हुए अपने गले में ड़ाल लिया और कहने लगा "सीताराम का दिया हुआ यह हार मेरे वक्षस्थल पर प्रकाशित होता रहेगा, और मेरे ह्रदय में जो सीताराम बस गये हैं, उनको स्थिर रखेगा।" फिर सब अयोध्या लौटे। राम से अनुमति लेकर विभीषण अपनी सेना सहित लंका लौटा। सुग्रीव और वानर किष्किंधा लौटे। हनुमान राम के पास ही रह गया।

शतकंठ रावण के संहार के बाद राम निर्विघ्न राज्य चलाता रहा। राम के राज्य-काल में नागरिकों को मालूम नहीं कि शोक, क्रोध, बुढ़ापा, लोभ, संक्षोभ आदि होते क्या हैं? वह प्रजा की सेवा में रत रहा। रात-दिन वह इसी सोच में रहता कि जनता की सेवा में कोई त्रुटि नहीं होनी चाहिये। वह कोई भी ऐसा काम नहीं करता और करने देता था, जिससे प्रजा को दुख पहुँचे। राम-राज्य एक आदर्श बन गया। प्रजा भी अपनी तरफ़ से सदा सावधान रहती कि हमसे कोई भूल ना हो जाए। किसी ने ठीक ही कहा है कि यथा राजा तथा प्रजा।

हनुमान राम की सेवा में लगा रहा। कुछ समय बाद उसे अपनी माँ अंजना देवी को देखने की प्रबल इच्छा हुई। राम की अनुमति लेकर वह गंधमादन पर्वत के निकट निवास करती हुई अपनी माँ अंजना देवी के आश्रम में गया।

(सशेष)

दो महान वृक्ष

नारद ने भू-भ्रमण समाप्त किया और भगवान विष्णु के दर्शनार्थ वैकुंठ गया।

उसको देखकर महाविष्णु ने कहा "नारद, लगता है, भूलोक में संचार करके आये हो। वहाँ के क्या समाचार हैं? वहाँ के मनुष्य सर्व सुखों का अनुभव करते हुए विश्राम से अपने जीवन-यापन में लगे हुए हैं ना? संपन्न मनुष्यों में दया, धर्म और दरिद्रों में नियम व निष्ठा स्थापित हैं ना?"

नारद विष्णु की इस बात पर हँसा और बोला "मालूम नहीं, क्यों आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए मेरा मन सन्नद्ध नहीं है। उत्तम तो यही होगा कि आप ही एक बार भूलोक में संचार करने निकलें।" विष्णु नारद को साथ लेकर भूलोक का संचार करने निकला। दोनों यात्रियों के वेष में भूलोक में उतर आये। वे दोनों एक नगर में पहुँचे और वहाँ के एक बड़े भवन के पास गये। भवन के द्वार बंद थे। विष्णु और नारद ने दरवाज़े खटखटाये और अंदर के आदमियों को आवाज़ दी। अंदर से कोई जवाब नहीं आया।

इसके बाद दोनों दूसरे घर के पास गये। उस घर के दरवाज़े बिलकुल खुले हुए थे। उन्होने घरवालों से कहा "हम यात्री हैं। बहुत भूखे हैं। क्या हमें आपका आतिथ्य प्राप्त होगा?"

उनके इस प्रश्न से घरवाले आगबबूला हो गये। और कोई उत्तर दिये बिनाधड़ाम से द्वार बंद कर लिया।

भगवान विष्णु को उनका व्यवहार बड़ा अरुचिकर लगा। लेकिन नारद ने अपना सर दूसरी तरफ़ मोड़ लिया और अपने ही आप हँसने लगा।

इस तरह वे अन्य घरों में भी गये। वे
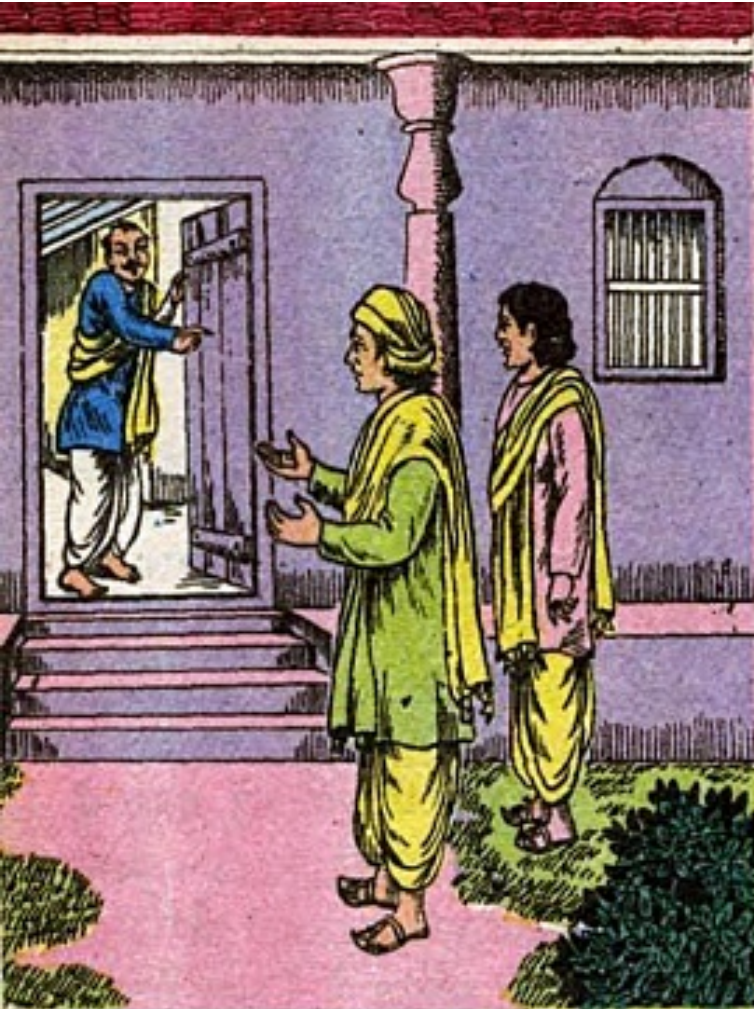
प्रार्थना करते गये कि हम यात्री हैं, भूखे हैं, हमें आपका आतिथ्य चाहिये ।

"तुम लगों को आतिथ्य दें? कदापि नहीं । मुट्ठी भर चावल भी आप लोगों को नहीं देंगे, चले जाओ" कहते हुए कुछ लोगों ने उन्हें भगा दिया ।

कुछ और लोगों ने कहा"काम करके कमावो और खाओ । भीख माँगते हुए शरम नहीं आती?"

आखिर विष्णु और नारद एक झोंपड़ी के पास जये और अंदर के लोगों को पुकारा । उनकी पुकार सुनकर एक बूढ़े ने झोंपड़ी से बाहर झाँककर देखा । दूसरे ही क्षण वह हँसता हुआ बाहर आयदा और बोला "पधारो पुत्रो, लगता है, तुम दोनों यात्री हो । हाँ, हम दोनों पति-पत्नी दरिद्र हैं, परंतु जितना हमसे हो सके, अवश्य आतिथ्य करेंगे ।"

भगवान विष्णु और नारद उसके पीछे-पीछे झोंपड़ी के अंदर गये । वहाँ एक बुढ़िया थी । वह उस वृद्ध की धर्मपत्नी थी । उन अतिथियों को देखकर मुस्कुराती हुई उसने फटी चटाई बिछायी और उनका कुशल मंगल पूछा ।

"लगता है, यात्रा के कारण बहुत थके हुए हो । थोड़ी देर सब्र करोगे तो खाना पकाऊँगी" बुढ़िया ने कहा ।

वृद्ध ने उस झोंपड़ी के कोने में जो बरतन थे, उन्हें लिया और थोड़ा-सा चावल एक बरतन में ड़ाला । उसे अपनी पत्नी के हाथ में दिया । फिर बाहर आया और झोंपड़ी के ऊपर फैली हई बेलों से कुछ तुरई तोड़े और पत्नी को दिया । बाद वह अतिथियों के पास आया और कहा "खाना तैयार होने में और थोड़ा-सा समय लगेगा । इतने में अच्छा होगा, अगर आप थोड़ा-सा नाश्ता कर लें । इससे आपको थोड़ी शांति भी मिलेगी । हमारे पिछवाड़े में फली पकी ककड़ी और भैंसे का थोड़ा-सा दूध, यही आपका नाश्ता है ।"

उसने ककड़ी को बीच मे काटा और दोनों टुकड़े विष्णु और नारद को दिया । मिट्टी के बरतन में जो दूध था, उसे दो छोटे कुल्हड़ों में ड़ालकर उन्हें दिया ।

दरिद्र होते हुए भी वृद्ध दंपति ने जो आदर किया, उसपर विष्णु भगवान बहुत

ही संतृप्त हुए ।

"दादाजी, आपकी क्या कोई संतान नहीं है? इस बुढ़ापे में आपकी देख-रेख करनेवाला कोई बंधु नहीं है? आप लोग अपना पालन-पोषण स्वयं ही क्यों कर रहे हैं?" विष्णु ने पूछा ।

इसपर वृद्ध हँसता हुआ बोला "हमारी कोई संतान नहीं है । अब बंधुओं के बारे में कहने के लिए कुछ नहीं रह गया है । इस बुढ़ापे में जो है, उसी से समय काट रहे हैं" ।

इतने में विष्णु ने कुल्हडे में ड़ाला हुआ आधा दूध पी लिया और ज़मीन पर रख दिया । पर अब वह दूध से भरा हुआ था । ककड़ी के आधे भाग को नारद के हाथ में जैसे रखा था, खाने के बाद भी वह जैसे का तैसा था ।

वृद्ध ने यह देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा ना रही । उसने सोचा कि ये येई भगवान होंगे अथवा कोई महापुरुष । अपनी पत्नी से उसने कहा "देखा, हमारे यहाँ जो अतिथि आये हैं वे कोई सामान्य मनुष्य नहीं हैं ।" उसने जो विचित्रता देखी, अपनी पत्नी को सुनाया ।

उस बुढ़िया के आश्चर्य और आनंद की सीमा ना रही । वह अतिथियों के पास आयी और हाथ जोड़कर कहा "पुत्रो, आप लोग कौन हैं? यह मुझ जैसी अज्ञानी की समझ के बाहर है । पर जान चुकी हूँ कि आप लोग महापुरुष हैं । आपने इस दरिद्रों की कुटिया में आकर
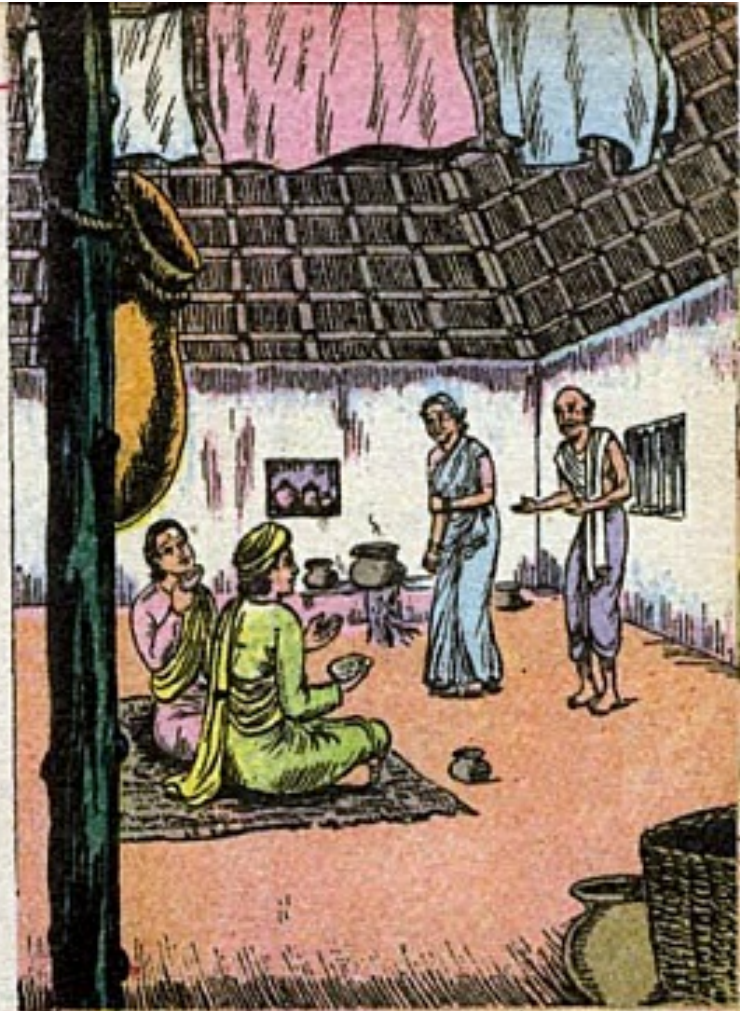
हमें पुनीत किया है । हमसे कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा करें ।"

इसपर विष्णु हँसा और कहा "दादी, हम आपके आतिथ्य के लिए ह्दयपूर्वक कृतज्ञ हैं । संतान और बंधुओं के अभाव में कम से कम आपके पास संपत्ति होती तो सुख से रह पाते । अब आप दोनों हमारे साथ झोंपड़ी के बाहर आइये ।"

भगवान विष्णु और नारद दोनों झोपड़ी के बाहर आये । उनके पीछे-पीछे वृद्ध दंपति भी । उन्हें एक विचित्रता दिखायी पड़ी, जिसे देखकर उन्हें भय भी हुआ और आश्चर्य भी । झोंपड़ी के सामने थोड़ी-सी दूरी पर अब मैदान ही मैदान था । वहाँ पहले, जो महल थे, एक भी वहाँ दिखायी नहीं दे रहा था ।

वृद्ध ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा "यह कैसा आश्चर्य है । यहाँ जो घर, पेड़ आदि थे, एक भी देखने में नहीं आता?"

विष्णु ने उत्तर दिया "वे सब भूमि में समा गये हैं । जो भूखे हैं, यात्रा के कारण थके हुए हैं, उनको हथेली भर अन्न भी जो नहीं दे सकते, बैठने के लिए फटी चटाई भी बिछा नहीं सकते, उनका भूमि पर रहना या भूमि में समा जाना दोनों समान हैं । है ना? अब कहो, तुम्हारी क्या-क्या इच्छाएँ हैं?"

"हम वृद्ध हो चुके हैं । हमारी केवल एक ही इच्छा है और वह है, हम दोनों एकसाथ मृत्यु की शरण में जाएँ । तब तक भगवान की पूजा के लिए यहाँ एक देवालय का निर्माण कीजिये, जहाँ भक्ति से, आनंद से हम अपना जीवन बिता सकें ।" वृद्ध ने कहा ।

दूसरे ही क्षण वहाँ एक देवालय खड़ा हो गया । वृद्ध दंपतियों की झोंपड़ी की जगह पर एक विशाल भवन खड़ा हो गया । विष्णु ने उन दंपतियों को आशीर्वाद दिया "तुम दोनों सच्चे अर्थों में मानव हो । जब तक तुम दोनों जीवित रहोगे, तब तक सुख से रहोगे । मृत्यु के बाद इस मंदिर के सम्मुख दो वट वृक्ष बनकर चिरस्थायी रहोगे ।" कहते हुए विष्णु और नारद अदृश्य हो गये ।

उन दंपतियों को भगवान से जो संपत्ति मिली, जब तक वे जीवित रहे, उसे दान में देते रहे । उस मंदिर के पुजारी बनकर भगवान की सेवा में लगे रहे । मरण के बाद भी वे दो वटवृक्ष बनकर वहीं रह गये ।

उन वृद्ध दंपतियों की, धर्म के प्रति निष्ठा उनकी भक्ति, व श्रद्धा को बहुत से लोगों ने ध्यान से देखा । सब को यह विदित हो गया कि यह मंदिर साक्षात् विष्णु भगवान का ही बनाया हुआ है । तब से वह प्रदेश एक दिव्यक्षेत्र बन गया, जहाँ सदा भक्तों की भीड़ लगी रहती थी ।

चंदामामा की खबरें

जंतुओं की प्रदर्शिनीशाला में 'मानव'

जंतुओं की प्रदर्शिनी-शालाओं में साधारणतया जंतु, पक्षी आदि होते हैं। युगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड नगर में जो जंतुओं की प्रदर्शिनीशाला है, उसमें एक 'मानव' को भी दिखाने का निर्णय उसके डायरेक्टर ने लिया। क्योंकि उन्हें लगा कि मानव उन प्राणियों की श्रेणी में है, जिनका नाश होता जा रहा है। उन्होंने अखबार में एक इश्तहार दिया कि सबेरे आठ बजे से रात के आठ बजे तक पिंजड़े में बैठकर पढ़ने, टी. वी देखने आदि आदरणीय काम करने के लिए 'पार्ट टाइम' की नौकरी करनेवाले एक कर्मचारी की जरूरत है। बहुत ही आवेदन-पत्र आये। पहला आवेदन-पत्र भेजनेवाला था- एक बेरोजगार कम्प्यूटर निपुण।

पीछे चलने में रिकार्ड

चंद्रन नाम के एक युवक ने, कोयम्बत्तूर के नेहरू स्टेडियम में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक लगभग ८१ कि. मी. की दूरी पीछे चलकर नया रिकार्ड स्थापित किया है। बारह घंटों की अवधि में ७६ बार स्टेडियम में वह पीछे की ओर घूमता रहा। चंद्रन की इच्छा है कि जिस प्रकार उसने कोयम्बत्तूर स्टेडियम में किया है, वैसे ही मद्रास, दिल्ली आदि नगरों में सफलतापूर्वक करूँ। चंद्रन को 'कराटे' में 'ब्लाक बेल्ट' प्राप्त हुआ है। हर रोज़ सबेरे १० कि. मी. दौड़ता है। हफ्ते में एक बार ५ कि. मी पीछे चलता है। केरल के तिरुचन्नूर का निवासी चंद्रन आजकल कोयम्बत्तूर में रहता है। मिमिक्री (नक़ल उतारना) और मोनोयाक्टिंग (एकपात्राभिनय) उसके रूचिकर काम हैं।

पहली चोरी

विश्वास तो किया नहीं जा सकता, परंतु यह तथ्य है। पुलिस के रिकार्ड बताते हैं कि पसिफ़िक महासमुद्र में 'कुक ऐलांड' नामक एक छोटे-से द्वीप में अब तक एक भी चोरी नहीं हुई है। पर, पिछले जुलाई में रारोटोंगा के एक होटल के दरवाज़े तोड़े गये और कमरे में प्रवेश करके २४,७५० के मूल्य के अमीरीकी डालरों की चोरी करते हुए एक आदमी पकड़ा गया। सीनियर पुलिस अफ़सरों का कथन है कि इस द्वीप में यह पहली चोरी है। स्थानीय रेडियो ने इस समाचार को प्रसारित करते हुए कहा "कुक ऐलांड' भी बाक़ी दुनिया में शामिल हो गया है"। आप समझ गये होंगे कि इस समाचारमें कितना व्यंग्य भरा हुआ है।

लिथूनिया-एक आदर्श

लिथूनिया बाल्टिक देशों में से एक है। वहाँ के मंत्रिमंडल के सब मंत्रियों ने निर्णय किया कि वे स्वयं तक्षण ही धूम्रपान करना छोड़ देंगे। शासन चलानेवाले ही स्वयं जब आदर्श बनेंगे तब शासित जनता भी अवश्य ही उनका अनुसरण करेगी ना?

होशियार दामाद

गोपालपुर गाँव की लड़की गौरी और शहर में नौकरी करते हुए गिरि की नयी- नयी शादी हुई । गौरी की माँ कांता खर्च कर देने में आगे, पीछे सोचती ही नहीं थी । जो चीज़ें नहीं चाहिये, उन्हें भी खरीदकर घर में छिपा रखने की उसकी आदत थी । पति रमण उसे समझाते-समझाते थक गया । कांता ने उसकी एक ना सुनी । उल्टे वह बहुत-से ऐसे काम करती रहती थी, जो उसके पति को बिलकुल पसंद नहीं थे ।

कांता अपनी बेटी को ससुराल भेजती हुई उससे बोली "अरी बुद्धू, अपने पति से हर बात मत बताना । मर्द औरतों को हर बात पर रोकते रहते हैं । उन्हे स्वतंत्र रूप से सोचने या काम करने नहीं देते । इसलिए यह कोई ज़रूरी नहीं है कि हम हर काम उनसे बताकर ही करें । हम जो करना चाहते हैं, निश्चिंत करते जाएँ ।"

दामाद उस समय सामान का हिसाब लगा रहा था । तब कांता पास आयी और अपने दामाद से बोली "देखिये दामादजी, आपके ससुर बिलकुल ही गँवारू हैं । किसी भी शौक़ से वे दूर भागते हैं । जब से शादी हुई तब से एक बढ़िया इत्र लाने को उनसे कहती आ रही हूँ । पर क्या फ़ायदा । आज तक वे नहीं ले आये । सुना है कि शहर की दूकानों में तरह-तरह के इत्र मिलते हैं । जब त्योहार पर यहाँ आएँगे तब गुलाबी इत्र लाइयेगा ।"

फिर गौरी ने अपने पति से कहा "मेरी माँ जो भी माँगती है, मेरे पिता उसे देने का नाम ही नहीं लेते । फिर भी मेरी माँ ने चुपचाप अपना जीवन उनके संग गुज़ारा । और कोई होतीं तो घर छोडकर कभी चली गयी होती । ऐसा पारिवारिक जीवन तो शत्रुओं के भाग्य में भी ना बदे ।" कहती

रामकृष्ण .जी

हुई आँसुओं को आँचल से पोंछने लगी ।

इस बीच रमण कमरे में आया तो माँ-बेटी ने बात वहीं काट दी । इधर-उधर की बातें करने के बाद दोनों ने बेटी और दामाद को बिदा किया ।

गौरी जिस दिन से अपने पति के घर आयी, उस दिन से उधार में तरह-तरह की साड़ियाँ, बरतन, घर क़े अलंकार की सामग्री आदि खरीदने लगी ।

गिरि ने अपनी पत्नी को समझाते हुए कहा "अब बेकार का इतना खर्च क्यों? हमें तो इन चीज़ों की जरूरत थोड़े ही है ।"

"अपनी माँ की तरह मैं कोई पुराने विचारों की औरत नहीं हूँ कि अपने पति से ड़रकर ज़िन्दगी काटूँ । मेरी माँ ने जो भी कहा, अपने अनुभव के आधार पर ही कहा है । इसलिए उसकी हर बात मेरे लिए वेद है, धर्म है ।"

दीपावली के त्योहार में अब थोड़े ही दिन बाकी थे । "कल ही हम मेरे घर निकलेंगे । माँने जो इत्र माँगा था, शाम को ज़रूर लाना" गौरी ने पति से कहा ।

बहुत रात हुई, पर गिरि घर नहीं लौटा । गौरी घबराने लगी । बहुत रात गुज़रने के बाद थका माँदा गिरि आया और हाँफता हुआ कुर्सी में बैठ गया ।

'क्या बात है? क्यों इतने ढ़ीले पड़ गये हो? क्या हुआ है?" गौरी ने बड़ी आतुरता से पूछा ।

गिरि ने गहरी साँस लेते हुए कहा "क्या

बताऊँ? सास ने जो इत्र लाने को कहा, उससे तो मेरा दिवाला निकल गया । उस गुलाबी इत्र का उपयोग तो तुम्हारी माँ की जवानी के दिनों में हुआ करता था । अब उसका उपयोग बिलकुल ही पुरानी आदत कही और मानी जा रही है । इस वजह से वह किसी भी दुकान में नहीं मिला । आख़िर बहुत ढूँढ़ने के बाद एक आदमी के पास वह इत्र पाया, जो एक पेड़ के नीचे काँच की पेटी में इत्रों के शीशे रखकर बेच रहा है । उसकी लंबी-लंबी मूँछे हैं, घने बाल हैं । देखने पर समझ नहीं पाया कि वह अव्वल दर्जे का धोखेबाज़ है । गुलाबी इत्र कहता हुआ कुछ मुझसे सुँघवाया । बस, फिर क्या था, होश खो बैठा । होश में आने पर देखा, वह

आदमी ग़ायब है । सामने सिर्फ़ पेड़ है ।"

गौरी दुखी होती हुई बोली "तो फिर वह गुलाबी इत्र कहाँ मिलेगा?"

"भगवान जाने", पहले यह तो बताओ उन हज़ार रुपयों का क्या होगा, जो आज ही शाम को दफ्तर से लिया । वह मेरे वेतन की रक़म थी । अच्छी तरह सुन लो, हम जब तुम्हारे घर जाएँगे तब यह रक़म अपनी माँ से वसूल करना । यह नुकसान मुझे तुम्हारी माँ की वजह से ही हुआ है । ऐसा नहीं हुआ तो याद रखो, त्योहार के बाद मैं अकेले ही लौटूँगा, मेरे साथ तुम नहीं होगी ।" गिरि ने बड़ी नाराज़ी से कहा ।

गौरी ड़र से काँप गयी । पति को इतना नाराज़ होते हुए पहली बार उसने देखा ।

किराये की गाड़ी में मायका पहुँचने के बाद गौरी अपनी माँ को पिछवाड़े के इमली के पेड़ के नीचे ले गयी और बोली, "माँ, वह गुलाबी इत्र हो या चमेली का। लगता है मेरा दांपत्य-जीवन ध्वंस करके रहेगा ।" फिर उसने जो हुआ, सब माँ को बताया । फिर कहा "हज़ार रुपये जब तुम दोगी, तभी वे मुझे शहर ले जाएँगे ।"

कांता भौंचक्का रह गयी और बोली "पेड़ के नीचे बैठे किसी बदमाश ने उसे धोखा दिया हो तो मुझे नुक़सान भरना पड़ेगा? यह भी कोई बात हुई?"

'तुम्हारे लिए गुलाबी इत्र खरीदने गये तो यह अनर्थ हो गया । अगर तुम यह रक़म नहीं दोगी तो दंड मुझे मिले? यह भी कोई बात हुई?" गौरी नाराज़ होती हुई बोली ।

"मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है । तेरे पिता को इस बात का पता लग गया तो मेरी जान निकाल देंगे" कांता घबराती हुई बोली ।

"पिता की ज़ानकरी के बिना तुम अनेक काम करती रहती हो । ऐसा ही कोई काम करो और किसी भी तरह वे हज़ार रुपये अपने दामाद को दे देना" गौरी ने कहा ।

कांता थोड़ी देर सोचने के बाद बोली "मेरा दुर्भाग्य है । अब हम कर भी क्या सकते हैं? रक़म तो किसी भी हालत में देनी ही पड़ेगी । इस मुसीबत से बचने के लिए हमें ऐसा करना पड़ेगा" यों उसने बेटी से बताया कि हम क्या करें?

जिस अलमारी में पैसे थे, उसकी चाभी हमेशा रमण अपने ही पास रखता था। उस अलमारी पर एक भारी पेटी भी थी, जिसमें पुराना सामान भरा हुआ था। उसे नीचे उतारना औरतों के बस की बात नहीं है। आधी रात को पति के सिरहाने से वह चाभी निकालेगी और दामाद को देगी। फिर दामाद चुपचाप वह पेटी नीचे उतारेगा और अलमारी में से हज़ार रुपये निकाल लेगा।

सास और पत्नी की बातें गिरि ने ग़ौर से सुनीं और उसने यह चोरी करने से साफ़-साफ़ इनकार कर दिया।

इसपर कांता झल्लायी और बोली "दामादजी, ज़्यादा बनिये मत। भला यह चोरी कैसे हो सकती है? आपकी जो रक़म खो गयी, उसे ले रहे हो। कोई भी अक़्लमंद यह नहीं कहेगा कि यह चोरी है।" "हाँ, आपकी भी बात सही है" गिरि ने कहा।

बिना किसी रुकावट के कांता की योजना सफल हुई। दूसरे ही दिन त्योहार था। कांता ने अपने पति से कहा "अलमारी खोलिये। त्योहार का दिन है ना? गहने निकाल लूँगी।"

रमण ने पुराने सामान की पेटी नीचे उतारी और अलमारी खोली। अंदर गहनों की खाली पेटियाँ तितर-बितर पड़ी हुई थीं। उनमें एक भी गहना नहीं था। यह देखते ही कांता एकदम ज़ोर से चिल्ला पड़ी।

रमण आश्चर्य प्रकट करता हुआ बोला "अलमारी तो बंद थी, फिर गहनों की चोरी कैसे हो गयी?"

"यह सब आपके दामाद का काम है।" कहती चिल्लाती हुई गिरि के कमरे में गयी
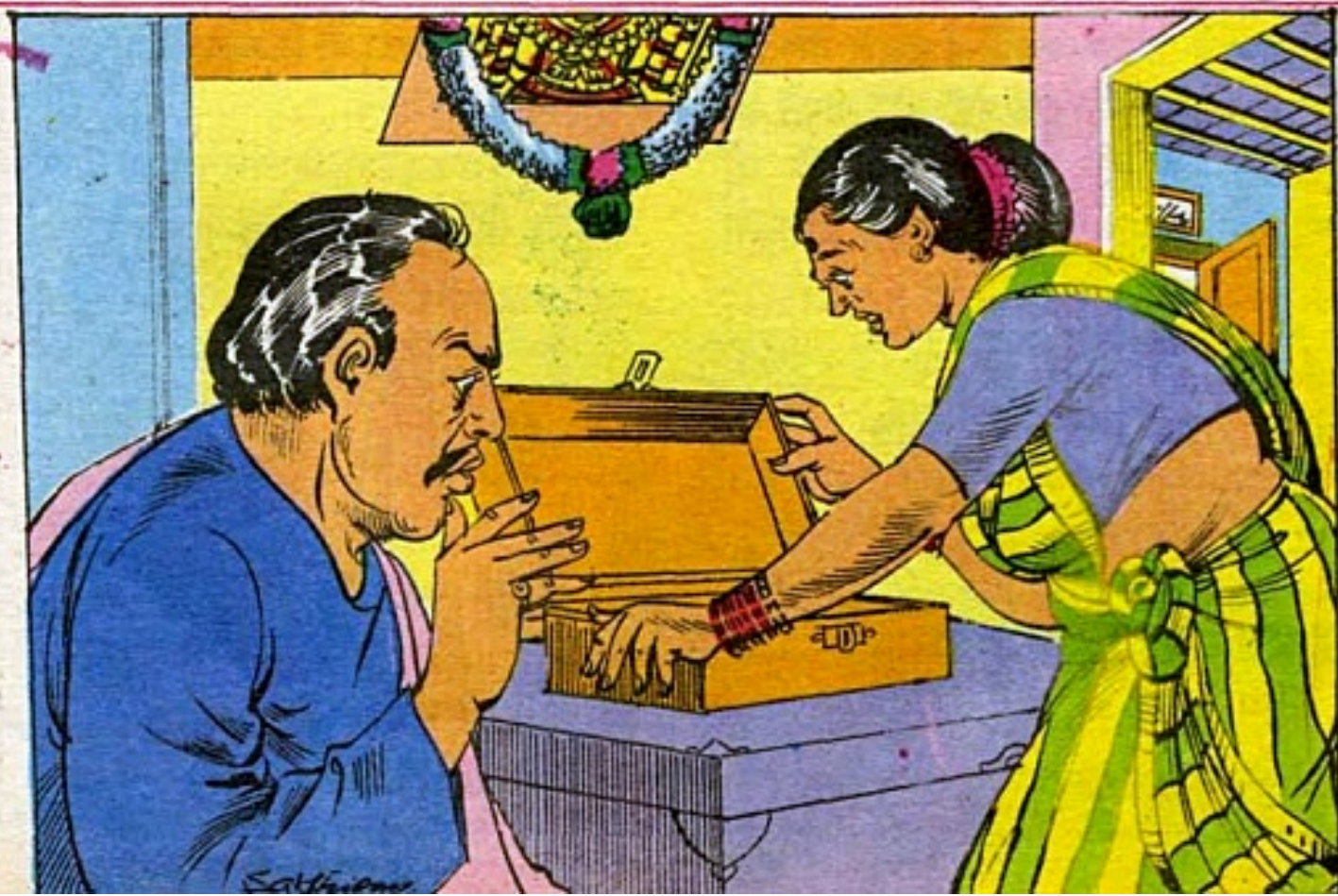
और बोली "आपने यह क्या कर दिया? जानते नहीं, सास के गहनों की चोरी गोहत्या के समान है । वह भी त्योहार के दिन । सुनिये, मेरे गहने मुझे दे दीजिये । नहीं तो मैं बेहोश हो जाऊँगी, मैं कहीं की ना रहूँगी ।"

गिरि ने बड़ी मासूमी जताते हुए कहा "दामाद को त्योहार पर बुलाकर चोरी का इल्ज़ाम लगायेंगे? यही है आपके घर की मर्यादा । एक क्षण भी इस घर में नहीं रहूँगा" नाराज़ होता हुआ बोला ।

"पहले मेरे गहने मुझे लौटाइये । फिर चले जाना । अलमारी खोलकर हज़ार रुपये लेने को कहा तो मेरे गहनों की भी चोरी करते हो?" आँसू बहाती हुई कांता बोली ।

"क्या कहा? अलमारी खोलकर मुझे हज़ार रूपये लेने को कहा? यह सब आपकी गढ़ी कहानी है" गिरि ने जवाब दिया ।

रमण नें उनकी बातों में दख़ल देते हुए कहा "कांता, क्या बक रही हो? अपने को काबू में रख और बात कर । गिरि को ऐसी क्या ज़रुरत आ पड़ी कि वह अलमारी खोले और पैसे व गहनों की चोरी करे ।"

'मुझे माफ़ कीजिये' कहती हुई कांता अपने पति के पैरों पर गिर पड़ी और सब कुछ बताया, जो हुआ ।

रमण ने उसे सांत्वना देते हुए कहा "तुम्हारे गहनों की कोई चोरी नहीं हुई । यह नाटक मैंने और तुम्हारे दामाद ने मिलकर खेला है । तुम उस दिन जब अपने दामाद से कह रही थी कि शहर से गुलाबी इत्र ले आओ, बग़ल के कमरे में रहकर मैने सब कुछ सुना । मै तुमसे यह पूछकर तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहता था कि इस उम्र में इत्र की क्या ज़रूरत है? पति की जानकारी के बिना बेमतलब के ऐसे कामों से कितना अनर्थ हो सकता है, यह जतलाने के लिए ही हम दोनों ने यह नाटक खेला है । इस घटना का सूत्रधारी तुम्हारा दामाद ही है । हमारी बेटी की अक़्ल को ठिकाने लगानेवाला दामाद होशियार है ।

गिरि जेब से एक शीशी निकालता हुआ बोला "सासज़ी, लीजिये, अपना गुलाबी इत्र ।"

मछली पकड़ने की थैली

घुग्गी बगुलों की तरह पेलिकान पक्षियों का मुँह भी बड़ा होता है। इसकी नाक के निचले भाग पर एक बड़ी थैली होती है। मछलियों को पकड़ने में इसका उपयोग होता है। इन पक्षियों का मुख्य आहार मछली है। इसलिए ये पक्षी बड़ी मुस्तैदी से उन्हें पकड़ते हैं। पेलिकान पक्षी बड़ी संख्या में पानी पर तैरते जाते हैं और छोटी मछलियों को घेरकर ऐसी जगह ले आते हैं, जहाँ पानी की गहराई कम होती है। फिर झट से अपनी नाक पानी में डुबोते हैं और जाल जैसी थैलियों में मछलियाँ भर लेते हैं। उत्तर अमरीका का ब्रौन पेलिकान एक ही ऐसा पक्षी है, जो पानी पर उड़ता हुआ, दो मीटर की गहराई में रहते हुए मछलियों को झट से डूबकर पकड़ सकता हैं।

छोटी मछलियों को खानेवाले बड़े तिमिंगल

तिमिंगलों में से सब से बड़ा तिमिंगल नीले रंग का है। इसका मुँह भी बहुत बड़ा होता है। जंतुओं में बड़ा यह जलचर 'क्रिल' जैसी छोटी-सी छोटी मछलियों को खाकर ज़िन्दा रहते हैं। 'क्रिल' समूह में जाते रहते हैं तब तिमिंगल मुँह फाड़कर फूँकते हैं। तब पानी के साथ-साथ ये मछलियाँ भी उसके मुँह के अंदर चली आती हैं। इसके बाद वह अपनी जीभ का उपयोग करके अपने सिर के दोनों तरफ के जो दोने हैं, उनसे पानी बाहर निकाल देता है। इसके बाद तिमिंगल, अपने मुँह में जो मछलियाँ हैं, आराम से खाने लगता है।
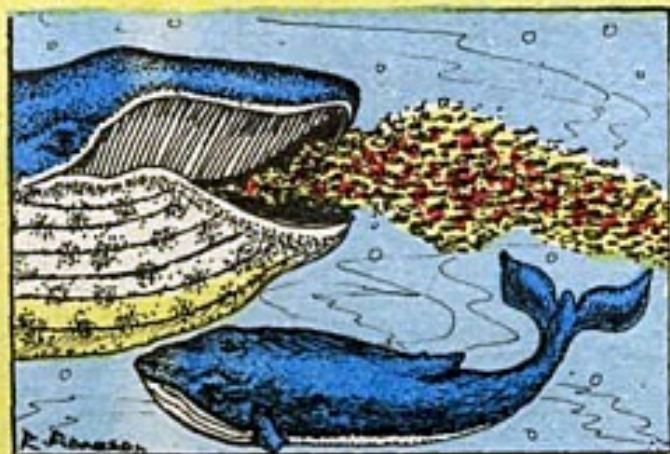
गिब्बन की चिल्लाहट

उरांग उटान, चिंपांजी, गोरिल्ला, गिब्बन ये चारों वानर जाति से संबंधित जंतुओं में प्रमुख हैं। चे चारों दो पैरों पर चल सकते हैं। लेकिन गिब्बन ही एक ऐसा है, जो आदमी की तरह सीधे खड़े हो सकता है। बाक़ी तीनों, समान्यतया झुककर पैरों पर चलते हैं। सेयामंग गिब्बन का स्वर बहुत ही ऊँचा होता है। थैली की माप का गले का इसका भाग इस के उपयोग में आता है। जब यह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना चाहता है, तो लंबी साँस खींचता है। तब गले के अंदर जो थैली है, वह हवा से भर जाती है और तब बूम-बूम नामक स्वर निकलता रहता है।

Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER
RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text
books. Time for games. Time to meet old friends.
And make new ones. Time to start studying
again. Because there's so much to learn about
the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a
great year in school. And remember to tell u
what you've learnt everyday, when you
come home from school !
THE
CHANDAMAMA
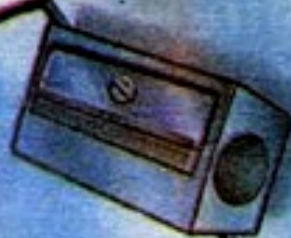
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां दिसम्बर, १९९३ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M. Natarajan

M. Natarajan

*** उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । * १० अक्तूबर'९३ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियाँ को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । * दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

अगस्त १९९३, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मुट्ठी में बंद है तक़दीर हमारी!**

दूसरा फोटो : **कैमरे में बंद है तस्वीर तुम्हारी!!**

प्रेषक : कु.प्रीति शुक्ला, 12/A/80, W.E.A, Karol Baag, New Delhi-110005

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

YOU'LL

Everything for BAKEMAN'S

MILK DROPS